लघु सिद्धांत कौमुदी

(कृत् तद्धित तथा स्त्री प्रत्यय)

डॉ० महेश चन्द्र शर्मा
डॉ० सुधा सिसौदिया



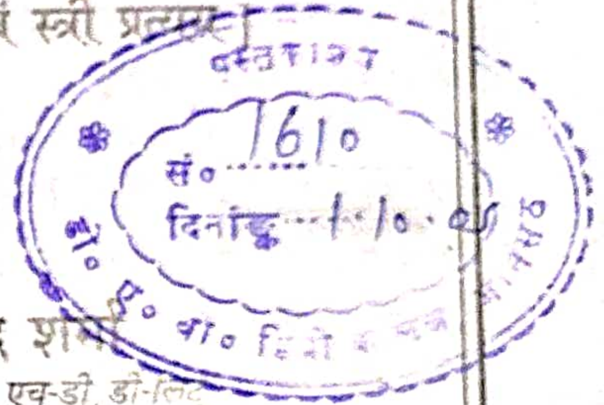


ज्ञान प्रकाशन, मेरठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उद्धृत नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार

लघु सिद्धान्त कौमुदी

[प्रमुख कृत्, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय]



डॉ० महेश चन्द्र शर्मा

एम० ए०, पी० एच-डी, डी-लिट्

रीडर एवं अध्यक्ष : संस्कृत-विभाग

मुलतानीमल मोदी महाविद्यालय

मोदीनगर (उ० प्र०)

डॉ० सुधा सिसोदिया

एम० ए०, पी० एच-डी०

गिन्नी देवी गर्ल्स डिग्री कॉलिज

मोदीनगर (गा० बाद)

 (0121) 2519466

ज्ञान प्रकाशन, मेरठ

प्राप्ति स्थान :
ज्ञान बुक डिपो
सुभाष बाजार, मेरठ
☎ (0121) 2519466

नवीन संस्करण

मूल्य : **20-00 रु० मात्र**

कम्प्यूटर टाइप सैटिंग :
कृष्णा कम्प्यूटर ग्राफिक्स
मेरठ।
☎ (121) 2450953
Mob. 9412100763

मुद्रक :
भगवती प्रिन्टर्स,
जयदेवी नगर, मेरठ।

प्राक्कथन

संस्कृत भारत की प्राचीनतम् भाषा है। भारतीय वाङ्मय की सभी विधायें—दर्शन, साहित्य, धर्म आदि इसी भाषा में उपनिबद्ध हैं। इसका व्याकरण भी महान है। उक्ति है—**द्वादश वर्षे, व्याकरणं श्रूयते।**

किसी भी भाषा का सम्यक् ज्ञान उसके व्याकरण के बिना सम्भव नहीं। यही तथ्य संस्कृत में भी चरितार्थ है। सम्पूर्ण व्याकरण का ज्ञान कराना तो बी० ए० के पाठ्यक्रम में असम्भव है परन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा बी० ए० के तीनों वर्ष में निर्धारित कतिपय अंशों की व्याख्या करना ही हमारा उद्देश्य है। प्रस्तुत पुस्तक में मूल सूत्र, वृत्ति और वार्तिक के साथ ही हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त सूत्र की सुस्पष्ट व्याख्या तथा विस्तृत रूप-सिद्धि भी दी गई है। बाजार में अन्य पुस्तकों के रहते हमारी इस पुस्तक का क्या वैशिष्ट्य है, यह तो इसके अध्ययन के उपरान्त ही ज्ञात हो सकता है फिर भी इतना कहा जा सकता है कि यह पुस्तक छात्रों के लिये सर्वथा उपयोगी है और वे इसे पढ़कर निश्चित ही सफलता प्राप्त करेंगे।

इस संस्करण में पाठ्यक्रमानुसार कृत, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय दिये गये हैं।

इस पुस्तक की व्याख्या में अनेक कृती लेखकों की रचनाओं की सहायता ली गई हैं, जिनमें डॉ० द्विवेदी, कुशवाहा, ऑप्टे तथा श्रीधरानन्द शास्त्री आदि प्रमुख हैं। इन सभी विद्वानों को हमारी विनम्र प्रणति है। ज्ञान प्रकाशन, मेरठ के संचालक शर्मा बन्धुओं को मेरा अनेकशः साधुवाद है, जिनकी प्रेरणा से ही इस पुस्तक का प्रणयन हुआ है।

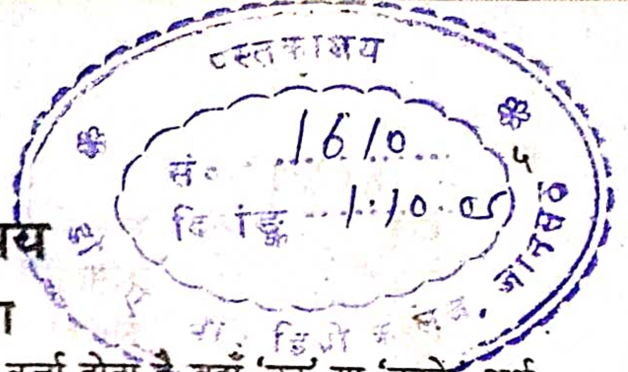
आश्विन शुक्ला प्रतिपदा २०६१

१५ अक्टुबर, २००४

—महेश चन्द्र शर्मा

—सुधा सिसोदिया

विषय-क्रम



कृत् प्रत्यय

१. क्त्वा

(१) जहाँ दो से अधिक धातुओं का एक ही कर्त्ता होता है, वहाँ 'कर' या 'करके' अर्थ क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय धातु में होते हैं।[१]

(२) धातु से पूर्व उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा प्रत्यय लगेगा।

(३) धातु से पूर्व यदि उपसर्ग होगा तो उसमें ल्यप् प्रत्यय जुड़ेगा।

(४) क्त्वा और ल्यप् प्रत्ययान्त रूप अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

(५) क्त्वा और 'त्वा' और ल्यप् का 'य' शेष रहता है।

(६) निषेधार्थक अलं और खलु के होने पर धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है[२], जैसे—जलं दत्वा (मत दो)। पीत्वा खलु (मत पिओ)। अलं हसित्वा (मत हंस)।

(७) धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती। धातु के सेट् होने पर धातु और प्रत्यय के बीच में 'इ' लगेगा। अनिट में नहीं। सेट् जैसे—पठित्वा, लिखित्वा। अनिट्—कृत्वा, हत्वा, धृत्वा।

(८) जिन धातुओं में मूल रूप से उ हटता है, वहाँ धातु और प्रत्यय के बीच 'इ' विकल्प से लगेगी।[३] अतः दो रूप बनेंगे, जैसे—जनित्वा—जात्वा। सनित्वा—सात्वा। खनित्वा—खात्वा।

(९) अनुनासिक अन्त वाले धातुओं की उपधा का दीर्घ हो जाता है[४]। कम्, क्रम्, यम्, दम्, भ्रम् शम् धातुओं के दो रूप बनते हैं। एक 'इ' लगाकर, दूसरा अम् को आन् बनाकर, जैसे—क्रमित्वा—क्रात्वा—क्रान्त्वा—कान्त्वा।

(१०) धातु के अन्ति च और ज को क हो जाता है, जैसे—त्यज् + त्वा = त्यक्त्वा।

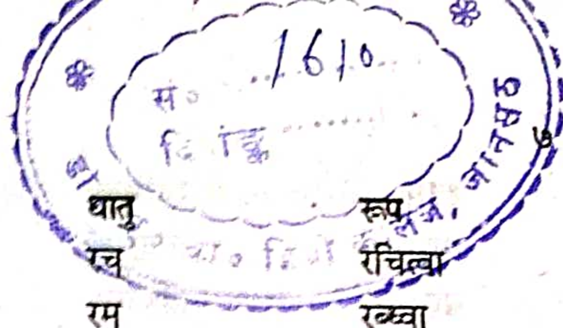
कतिपय क्त्वा प्रत्ययान्त रूप उदाहरण के रूप में नीचे दिये हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	जग्ध्वा	गम्	गत्वा
अर्च्	अर्चित्वा	गॄ	गीर्त्वा
अस्	भूत्वा	गै	गीत्वा
अस्	असित्वा	ग्रस्	ग्रसित्वा
आप्	आप्त्वा	ग्रह	गृहीत्वा
आस्	आसित्वा	घ्रा	घ्रात्वा
इ	इत्वा	चर्	चरित्वा
इष्	इष्ट्वा	चल्	चलित्वा
ईक्ष्	इक्षित्वा	चि	चित्वा

---

१. ८७९-समानकर्तृ कयोः पूर्वकाले ३/४/२१।
२. ८७८-अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ३/४/१८।
३. ८८२ उदितो वा ७/२/५६।
४. अनुनासिकल्प क्विालो क्ङिति च।

धातु	रूप	धातु	रूप
कम्	कमित्वा	चिन्त्	चिन्तयित्वा
कूर्द्	कूर्दित्वा	चुर	चोरयित्वा
कृ	कृत्वा	छिद्	छित्वा
कृष्	कृष्ट्वा	जन्	जनित्वा
कृ	कीर्त्वा	जप्	जपित्वा
क्रन्द्	क्रन्दित्वा	जि	जित्वा
क्रम्	क्रमित्वा/क्रान्त्वा	जीव्	जीवित्वा
क्री	क्रीत्वा	तन्	तनित्वा
क्रीड्	क्रीडित्वा	तप्	तप्त्वा
क्रुध्	क्रुद्ध्वा	तुष्	तुष्ट्वा
ज्ञा	ज्ञात्वा	तृ	तीर्त्वा
ज्वल्	ज्वलित्वा	त्यज्	त्यक्त्वा
क्षम्	क्षमित्वा	दंश्	दंष्ट्वा
क्षिप्	क्षिप्त्वा	दह्	दग्ध्वा
क्षुभ्	क्षुभित्वा	दा	दत्वा
खन्	खनित्वा/खात्वा	दिव्	देवित्वा
गण्	गणयित्वा	दिश्	दिष्ट्वा
दीप्	दीपित्वा	भू	भूत्वा
दुह्	दुग्ध्वा	भृ	भृत्वा
दृश्	दृष्ट्वा	भ्रंश	भ्रष्ट्वा
द्युत्	द्योतित्वा	भ्रम्	भ्रमित्वा/भ्रान्त्वा
धा	हित्वा	मथ्	मथित्वा
धाव्	धावित्वा	मन्	मत्वा
धृ	धृत्वा	मा	मित्वा
ध्या	ध्यात्वा	मिल्	मिलित्वा
ध्यै	ध्यात्वा	मुच्	मुक्त्वा
नम्	नत्वा	मुह्	मुग्ध्वा
नश्	नष्ट्वा	यज्	इष्ट्वा
नी	नीत्वा	यम्	यत्वा
नुद्	नुत्वा	या	यात्वा
नृत्	नृतित्वा	युज्	युक्त्वा
पच्	पक्त्वा	युध्	युद्ध्वा
पठ्	पठित्वा	रक्ष्	रक्षित्वा



धातु	रूप	धातु	रूप
पत्	पतित्वा	रच	रचित्वा
पद्	पत्वा	रभ्	रब्ध्वा
याच्	याचित्वा	रम्	रत्वा
पा	पीत्वा	रुद्	रुदित्वा
पाल्	पालयित्वा	रुध्	रुद्ध्वा
पुष्	पुष्ट्वा	रुह्	रूढ्वा
पूज्	पूजयित्वा	लप्	लपित्वा
पृ	पूर्त्वा	लभ्	लब्ध्वा
प्रच्छ्	पृष्ट्व।	लम्ब्	लम्बित्वा
बन्ध्	बद्ध्वा	लष्	लषित्वा
बुध्	बुद्ध्वा	लिख्	लिखित्वा
ब्रू	उक्त्वा	लिह्	लीढ्वा
भक्ष्	भक्षयित्वा	ली	लीत्वा
भज्	भक्त्वा	लुभ्	लुब्ध्वा
भञ्ज्	भङ्क्त्वा	वद्	उदित्वा
भाष्	भाषित्वा	वन्द्	वन्दित्वा
भिद्	भित्वा	वप्	उप्त्वा
भी	भीत्वा	वस्	उषित्वा
भुज्	भुक्त्वा	वह्	ऊढ्वा
विद्	विदित्वा, वेदयित्वा	सिव्	सेवित्वा
विश्	विष्ट्वा	सृज्	सृष्ट्वा
वृत्	वर्तित्वा	सेव्	सेवित्वा
वृध्	वर्धित्वा	सो	सित्वा
वृष्	वर्षित्वा	स्तु	स्तुत्वा
व्यध्	विद्ध्वा	स्था	स्थित्वा
शप्	शप्त्वा	स्ना	स्नात्वा
शम्	शान्त्वा	स्निह्	स्निग्ध्वा
शास्	शिष्ट्वा	स्पृश्	स्पृष्ट्वा
शी	शयित्वा	स्मृ	स्मृत्वा
शुष्	शुष्ट्वा	स्वप्	सुप्त्वा
श्रि	श्रित्वा	हन्	हत्वा
श्रु	श्रुत्वा	हस्	हसित्वा
श्लिष्	श्लिष्ट्वा	हा	हित्वा

श्वस्	श्वसित्वा	हु	हुत्वा
सद्	सत्त्वा	ह	हत्वा
सह्	सहित्वा	हृष्	हृषित्वा
साध्	सादध्वा	ह्वे	हूत्वा
सिच्	सिक्त्वा	सिध्	सिद्ध्वा

२. ल्यप् प्रत्यय

(१) धातु से पूर्व कोई अव्यय, उपसर्ग या च्वि प्रत्यय होता है तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् होता है। ल्यप् का 'य' शेष रहता है। उपसर्ग का उदाहरण, जैसे—प्र + आप् = **प्राप्य**। सम् + भू + य = **संभूय**। सम् + क्रम + य = **संक्राम्य**। च्वि प्रत्यय का उदाहरण— मालिनी + भू + ल्यप् = **मालिनीभूय**।

(२) धातु से पूर्व नञ् (अ) होगा तो ल्यप् न होकर क्त्वा होगा[१], जैसे—**अकृत्वा, अगत्वा**।

(३) ल्यप् प्रत्यय लगने पर साधारणतया धातु अपने मूल में रहती है। गुण या वृद्धि नहीं होती। 'इ' भी बीच में नहीं लगता, जैसे—वि + लिख् + य = **विलिख्य**। आ + नी + य = **आनीय**। वि + हस् + य = **विहस्य**।

(४) धातु के बाद ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ के बाद ल्यप् से पहले त् लग जाता है[२] जैसे—**आगत्य, अधीत्य, विजित्य**।

(५) प्रेरणार्थक धातुओं के 'इ' का लोप होता है[३], जैसे—**विचार > विचार्य**।

(६) धातु की उपधा में ह्रस्व 'इ' हो तो **उसे** अय् हो जाता है, जैसे—**विगणि, विगणय्य**। **प्रणमि, प्रणमय्य**। **विरचि, विरचय्य**।

(७) इन धातुओं के ये रूप होते **हैं—प्रक्षि > प्रक्षीय**। प्रापि > प्राप्य, प्रापय्य। वे—**प्रवाय**। ज्या—**प्रज्याय**। भी या भि—**प्रभाय**। ली—**विलीय, विलाय**।

(८) दा, धा, मा, स्था, गा, पा, हा, सा के **आ को इ नहीं होता**[४], जैसे—प्रदाय, प्रधाय, **प्रगाय, प्रपाय, बिहाय** आदि।

(९) वच्, स्वप्, वस्, वह् और वद् के वकार को 'उ' यज् के 'य' को 'इ' हो जाता है[५], जैसे—वच् का प्र + वच् + य = प्र + उच् + य = **प्रोच्य**।

(१०) कुछ क्त्वान्त और ल्यवन्त शब्द कर्मप्रवचनीय के तौर पर प्रयुक्त होते हैं, जैसे—**मुक्त्वा**—छोड़कर, अलावा, अतिरिक्त। **आदाय**—साथ। **उद्दिश्य**—तरफ। **अधिकृत्य**—बारे में। **संश्रुत्य** आदि।

---

१. समासेऽनञ् पूर्वेल्यप्।
२. ७७७ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ६/१/७१।
३. णेरनिटि।
४. नल्यपि।
५. वचि स्वापि मजादीनां किति च।

छात्रों की सुविधा के लिये कुछ ल्यप् प्रत्यय के रूप दिये जा रहे हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	प्रजग्ध्य	क्षम्	संक्षम्य
अधि + इ	अधीत्य	क्षिप्	प्रक्षिप्य
अर्च्	समर्च्य	क्षुभ्	प्रक्षुभ्य
अस्	सम्भूय	खन्	उत्खाय
अस्	प्रास्य	गण्	विगणय्य
आ + दृ	आदृत्य	गम्	आगम्य-आगत्य
आप्	प्राप्य	गृ	उद्गीर्य
आस्	अपास्य	गै	प्रगाय
इ	प्रेत्य	ग्रस्	संग्रस्य
इष्	समिष्य	ग्रह्	संगृह्य
ईक्ष्	समीक्ष्य	घ्रा	आघ्राय
उत् + डी	उड्डीय	चर्	आचर्य
कम्	संकाम्य	चल्	प्रचल्य
कूर्द्	प्रकूर्द्य	चि	संचित्य
कृ	उपकृत्य	चिन्त्	संचिन्त्य
कृष्	आकृष्य	चुर्	संचोर्य
कॄ	विकार्य	छिद्	उच्छिद्य
क्रन्द्	आक्रन्द्य	जन्	संजाय
क्रम्	संक्रम्य	जप्	संजप्य
क्री	विक्रीय	जि	विजित्य
क्रीड्	प्रक्रीड्य	जीव्	संजीव्य
क्रुध्	संक्रुध्य	पलायु	पलाय्य
ज्ञा	विज्ञाय	पा	निपाय
ज्वल्	प्रज्वल्य	पाल्	संपाल्य
तन्	वितत्य	पुष्	संपुष्य
तप्	संतप्य	पूज्	संपूज्य
तुष्	संतुष्य	पॄ	आपूर्य
तॄ	उत्तीर्य	प्रच्छ्	संपृच्छ्य
त्यज्	परित्यज्ज	बन्धु	आबध्य
दंश्	संदश्य	बुध्	प्रबुध्य
दह्	संदह्य	ब्रू	प्रोच्य
दा	आदाय	भक्ष्	संभक्ष्य

धातु	रूप	धातु	रूप
दिव्	संदीव्य	भज्	विभज्य
दिश्	उपदिश्य	भञ्ज्	विभंज्य
दीप्	संदीप्य	भाष्	संभाष्य
दुह्	संदुह्य	भिद्	अभिद्य
दंश्	संदृश्य	भी	संभिय
द्युत्	विद्युत्य	भुज्	उपभुज्य
धा	विधाय	भू	संभूय
धाव्	प्रधाव्य	भृ	संभृत्य
ध्मा	आधृत्य	भ्रंश	अभ्रंश्य
ध्यै	आध्माय	भ्रम्	संभ्रम्य
नम्	प्रणम्य	मथ्	विमथ्य
नश्	विनश्य	मन्	अनमत्य
निवृ	निवृत्य	मा	प्रमाय
नी	आनीय	मिल्	संमिल्य
नुद्	प्रणुद्य	मुच्	विमुच्य
नृत्	प्रनृत्य	मुह्	संमुह्य
पच्	संपच्य	यज्	समिज्य
पठ्	संपठ्य	यम्	संयम्य
पत्	निपत्य	या	प्रयाय
पद्	संपद्य	शम्	निशम्य
याच्	अनुयाच्य	शास्	अनुशिष्य
युज्	प्रयुज्य	शी	संशय्य
युध्	प्रयुध्य	शुष्	परिशुष्य
रक्ष्	संरक्ष्य	श्रि	आश्रित्य
रच्	विरचय्य	श्रु	संश्रुत्य
रभ्	आरभ्य	श्लिष्	आश्लिष्य
रम्	विरम्य	श्वस्	विश्वस्य
रूध्	विरूध्य	सद्	निषद्य
रूह्	आरूह्य	सह्	संसह्य
लप्	विलप्य	साध्	प्रसाध्य
लभ्	उपलभ्य	सिच्	अभिषच्य
लम्ब्	आलम्ब्य	सिध्	निषिध्य
लष्	अभिलष्य	सिव्	संसीव्य



धातु	रूप	धातु	रूप
लिख्	आलिख्य	सृज्	विसृज्य
लिह्	आलिह्य	सेव्	निषेव्य
ली	निलीय	सो	अवसाय
लुभ्	प्रलुभ्य	स्तु	प्रस्तुत्य
अद्	अनूद्य	स्था	प्रस्थाय
वन्द्	अभिवन्द्य	स्ना	प्रस्नाय
वप्	समुप्य	स्निह	उपस्निह्य
वस्	उपोष्य	स्पृश्	संस्पृश्य
वह्	प्रोह्य	स्मृ	विस्मृत्य
विद्	संविद्य	स्वप्	संपुप्य
विद्	निवेद्य	हन्	निहत्य
विश्	प्रविश्य	हस्	विहस्य
वृत्	निवृत्य	हा	विहाय
वृध्	संवृध्य	हु	आहुत्य
वृष्	प्रवृष्य	हृ	प्रहृत्य
व्यध्	आविध्य	हृष्	प्रहृष्य
शप्	अभिशप्य	ह्वे	आहूय
रूद्	विरूद्य		

३. तुमुन् प्रत्यय

(१) 'को', 'के लिये' अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। 'तुमुन्' का 'तुम' शेष रहता हैं तुमुन् प्रत्ययों के योग में क्रिया के लिये क्रिया की जाती है[1]।

(२) तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते है। इनके रूप नहीं चलते। उदाहरण के लिये—सः **पठितुम्, लेखितुम्, क्रीडितुम्,** विद्यालयं गच्छति।

(३) तुमुन् प्रत्यान्त का तथा प्रधान क्रिया का एक ही कर्त्ता होता है[2], जैसे—**स भोक्तुं गच्छति।**

(४) इच्छार्थक धातुओं के साथ तुमुन् प्रत्यय जुड़ता है, जैसे—**सः अध्येतुं गच्छति** (वह पढ़ने की इच्छा से जाता है)।

(५) समयवाचक शब्दों के साथ तुमुन् होता है[3], जैसे—**कालः, समय, वेला** वा भोक्तुं।

(६) **शक्** (सकना!), **धृष्** (धृष्ट होना, हिम्मत करना), ज्ञा (जानना), ग्ला (थकना, मुरझाना), **घट्** (प्रत्यय करना), **रभ्** (आरम्भ करना), **लभ्** (पाना), क्रम (आरम्भ करना), **सह्** (सहना), **अर्ह**

---

१. **तुमुन्ण्वुलो क्रियायां क्रियार्थायाम्।**
२. समानकर्तृकेषु तुमुन्।
३. कालसमयबेलासु तुमुन्।

(योग्य होना), अस् (होना) इन अर्थ वाली धातुओं के साथ तुमुन् प्रत्यय आता है[१], जैसे—पठितुं शक्नोति। भोक्तुं जानाति। भोक्तुं आरभते।

(७) पर्याप्त, समर्थ, योग्य अर्थ वाले शब्दों के साथ तथा योग्यता, शक्ति, नैपुण्य या प्रावीण्य अर्थ वाले विशेष्यों के साथ भी तुमुन् का प्रयोग होता है[२], जैसे—लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं क समर्थः (भाग्य में लिखे को कौन मिटा सकता है) ? अस्ति मे विभवः सर्वं परिज्ञातुम् (मुझमें सब कुछ जानने की शक्ति है)। कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति (अग्नि के अतिरिक्त और कौन जलाने में समर्थ है) ? भोक्तुं, प्रवीणः, कुशलः वा (खाने में निपुण)।

(८) धातु को गुण होता है, जैसे—जि—जेतुम्, भू—भवितुम्, कृ—कर्तुम्, ह—हर्तुम्। धृ—धर्तुम्।

(९) धातु के अन्तिम च और ज् को क्, द, को त्, ध् को द् और म् को व् होता है, जैसे—पच्—पक्तुम्, भुज्—भोक्तुम्, छिद्—छेत्तुम्, रुध्—रोद्धुम्। लभ्—लब्धुम्।

(१०) धातु के अन्तिम 'च्छ' को और 'श्' को 'ष्' होता है। व्रश्च, भ्रस्ज, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातुओं के च् या ज़् को ष् होता है। ष् होकर इनके तुमुन् प्रत्ययान्त ष्टुम् वाले रूप बनते हैं[३], जैसे—प्रच्छ—प्रष्टुम्। प्रविश—प्रवेष्टुम्। सृज्—स्रष्टुम्।

(११) धातुओं के अन्तिम ए और ऐ को आ हो जाता है[४], जैसे—

आह्वे—आह्वातुम्। गै—गातुम्। त्रै—त्रातुम्।

(१२) धातुओं के अन्तिम म् को न् हो जाता है, जैसे—गम्—गन्तुम्, रम्—रन्तुम्।

(१३) धातु के अन्तिम ह् को ध् या ढ् होकर ग्धुम् या ढुम् वाला रूप बनता है, जैसे—द्रुह,—दग्धुम्। द्रुह्—द्रोग्धं। दुह्—दोग्धुं। लिह्—लेढुं। वह्—वोढुम्।

(१४) तुम् के म् का लोप हो जाता है बाद में इच्छार्थ काम या मनस् हों तो[५], जैसे—वक्तुकामः, वक्तुमनाः (बोलने का इच्छुक)।

कुछ तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द नीचे दिये जा रहे हैं—

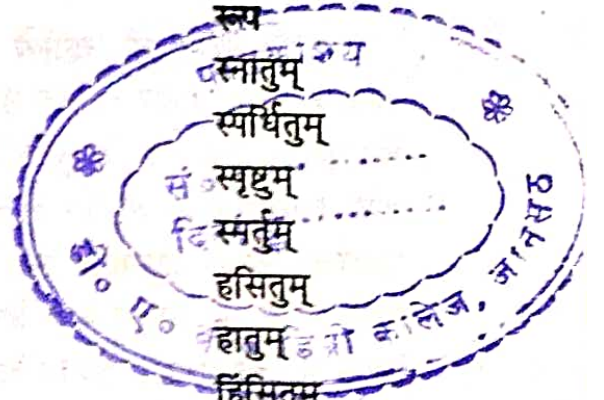
धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	अत्तुम्	खाद्	खादितुम्
अधि + ई	अध्येतुम्	गण	गणयितुम्
अर्च	अर्चितुम्	गम्	गन्तुम्
अस्	अवितुम्	गर्ज	गर्जितुम्
आ + रभ्	आरब्धुम्	गृ	गरितुम्
आ + रूह	आरोढुम्	गै	गातुम्

१. शक्धृषज्ञाग्लावट्रभलभक्रमसहमस्त्यर्थेषु तुमुन्।
२. पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु।
३. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः।
४. आदेच उपदेशेऽशिति।
५. तुम् काममनसोरपि।

धातु	रूप	धातु	रूप
आ + लप्	आलपितुम्	ग्रस्	ग्रसितुम्
आस्	आसितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्
आ + ह्वे	आह्वातुम्	घ्रा	घ्रातुम्
इ	एतुम्	चर्	चरितुम्
एष्	इषितुम्	चल्	चलितुम्
क्री	क्रेतुम्	चि	चेतुम्
क्रीड्	क्रीडितुम्	चिन्त	चिन्तयितुम्
क्रुध्	क्रोद्धुम्	चर्	चोरयितुम्
क्षम्	क्षमितुम्	चेष्ट	चेष्टितुम्
क्षिप्	क्षेप्तुम्	छिद्	छेत्तुम्
खन्	खनितुम्	जन्	जनितुम्
ईक्ष्	ईक्षितुम्	नम्	नन्तुम्
कथ्	कथयितुम्	नश्	नष्टुम्
कम्	कमयितुम्	निन्द्	निन्दितुम्
कम्प	कम्पितुम्	नी	नेतुम्
कूर्द	कूर्दितुम्	नृत	नर्तितुम्
कृ	कर्तुम्	पच्	पक्तुम्
कृप्	कल्पितुम्	पठ्	पठितुम्
कृष्	कर्ष्टुम्	पत्	पतितुम्
कृ	करितुम्	पद्	पत्तुम्
क्रन्द्	क्रन्दितुम्	पलाय्	पलायितुम्
क्र	क्रमितुम्	पा	पातुम्
जप्	जपितुम्	पाल	पालयितुम्
जि	जेतुम्	पुष्	पोषितुम्
जीव	जीवितुम्	पूज्	पूजयितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम्	प्रच्छ	प्रष्तुम्
ज्वल्	ज्वलितुम्	प्रेर्	प्रेरियतुम्
डी	डयितुम्	बन्ध्	बन्धुम्
तप्	तप्तुम्	बाध	बाधितुम्
तृ	तरितुम्	ब्रू	वक्तुम्
त्यज्	त्यक्तुम्	भक्ष्	भक्षयितुम्
त्र	त्रातुम्	भज्	भक्तुम्
दंश्	दंष्टुम्	भाष्	भाषितुम्

धातु	रूप	धातु	रूप
दह्	दग्धुम्	भिद्	भेत्तुम्
दा	दातुम्	भी	भेतुम्
दिश्	देष्टुम्	भुज्	भोक्तुम्
दीक्ष्	दीक्षितुम्	भू	भवितुम्
दुह्	दोग्धुम्	भृ	भर्तुम्
द्युत्	द्योतितुम्	भ्रम	भ्रमितुम्
दुह्	दोग्धुम्	मन्	मन्तुम्
धा	धातुम्	मा	मातुम्
धाव्	धावितुम्	मिल्	मेलितुम्
धृ	धर्तुम्	मुच्	मोक्तुम्
ध्यै	ध्यातुम्	मुद्	मोदितुम्
ध्वंस	ध्वंसितुम्	मृ	मर्तुम्
यज्	यष्टुम्	शंक्	शक्तुम्
यत्	यतितुम्	शक्	शंकितुम्
यम्	यन्तुम्	शप्	शप्तुम्
पा	पातुम्	शम्	शमितुम्
याच्	याचितुम्	शिक्ष्	शिक्षितुम्
युज्	योक्तुम्	शी	शयितुम्
युध्	योद्धुम्	शुच्	शोचितुम्
रक्ष्	रक्षितुम्	शुभ्	शोभितुम्
रच्	रचयितुम्	श्रि	श्रयितुम्
रम्	रन्तुम्	श्रु	श्रोतुम्
राज्	रजितुम्	श्लिष्	श्लेष्टुम्
रुच्	रोचितुम्	सह्	सोढुम्
रुद्	रोदितुम्	सिच्	सेक्तुम्
रुध्	रोद्धुम्	सिद्ध	सेद्धुम्
लभ्	लब्धुम्	सु	सोतुम्
लम्ब	लम्बितुम्	सृ	सर्तुम्
लष्	लषितुम्	सृज्	स्रष्टुम्
लिख्	लेखितुम्	सृप्	सर्प्तुम्
लिह्	लेढुम्	सेव्	सेवितुम्
लुभ्	लोभितुम्	स्तु	स्तोतुम्
वच्	वक्तुम्	स्था	स्थातुम्

धातु	रूप	धातु	रूप
वन्द्	वन्दितुम्	स्ना	स्नातुम्
वप्	वप्तुम्	स्पर्ध	स्पर्धितुम्
वस्	वस्तुम्	स्पृश	स्प्रष्टुम्
वह्	वोढुम्	स्मृ	स्मर्तुम्
विद्	वेत्तुम्	हस्	हसितुम्
विश्	वेष्टुम्	हा	हातुम्
वृ	वारियतुम्	सिस्	हिंसितुम्
वृत्	वर्तितुम्	हु	होतुम्
वृध्	वर्धितुम्	हृ	हर्तुम्
वे	वातुम्		



४. ण्यत्

ण्यत् प्रत्यय भी 'चाहिये' तथा योग्य अर्थ में आता है। इसकी भी अन्य सभी विशेषतायें यत् प्रत्यय के समान है ण्यत् प्रत्ययान्त रूप बनाने के निम्न नियम हैं—

(१) ऋकारान्त और हलन्त (व्यञ्जनान्त) धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है[१]। इसका भी य शेष रहता है।

(२) धातु के अन्तिम ऋ को आर् वृद्धि होती है[२]।

(३) ण्यत् के णकार[३] और न तथा तकार[४] की इत्संज्ञा होती है, जैसे—कृ + ण्यत् (य) ऋ को आर् वृद्धि क् + आर + य = कार्यम्। हृ-हार्यम्। धृ-धार्यम्।

(४) मृज् धातु से क्यप्[५] के विकल्प में ण्यत् प्रत्यय होता है।

(५) यदि प्रत्यय में से ञ् घ्, ण् और त् हटता है तो धातु के च और ज को कुत्व (कवर्ग) हो जाता ह[६]।

(६) मृज् के इ, उ, ऋ, लृ को वृद्धि होती है[७], जैसे—मृज् + ण्यत् (य) मृज् के ज् को ग् होकर मृग् + य। ऋ को आर् वृद्धि म + आर् + ग + य = मार्ग्यः।

(७) धातु की उपधा के ह्रस्व इ, उ ऋ को गुण होता है[८], जैसे—भुज् + ण्यत् (य)। उ को ओ गुण भोज् + य। भोग् + य = **भोग्यम्** (भक्ष्य), अन्यत्र ज् को ग् '**भोग्यम्**' होगा।

---

१. ऋहलोर्ण्यत्।
२. अचोञ्णिति।
३. चुटू।
४. हलन्त्यम्।
५. मृजेर्विभाषा।
६. चजोः कुधिण्ण्यतोः।
७. मृजेर्वृद्धिः।
८. पुगन्तस्य घूघस्य च।

५. यत् प्रत्यय

यत् प्रत्यय भी 'चाहिये' या 'योग्य' अर्थ में प्रयुक्त होता है। यत् प्रत्यय का **'य'** शेष रहता है। यत् प्रत्यय भी सकर्मक धातुओं से कर्म में तथा अकर्मक धातुओं से भाव में होती है। कर्मवाच्य में कर्म के तुल्य लिङ्ग, विभक्ति और वचन होंगे। कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार ही चलती है। भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया, क्रिया में नपुंसकलिङ्ग एकवचन, जैसे—**अस्माभिः जलं पेयम्**—हमें जल पीना चाहिये। कर्त्ता **'अस्माभिः'** में तृतीया, कर्म 'जलम्' में प्रथमा तथा क्रिया पेयम् कर्म के अनुसार ही एकवचन नपुंसकलिङ्ग। इसी प्रकार से—**त्वया दानं देयम्। भवता फलानि चेयानि।**

यत् प्रत्यय निष्पन्न शब्द तीनों लिङ्ग में चलते हैं। यत् प्रत्यान्त शब्द बनाने के लिये निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखें—

(१) आ, इ, ई, उ, ऊ अन्तवाली धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् के त् की इत्संज्ञा होकर **'य'** शेष रहता है।

(२) धातु से यत् प्रत्यय होने पर धातु के आ को ई होकर ऐ गुण[1] हो जाता है, जैसे—दा + यत्। दा को ई द + ई + यत् ई को ए गुण द् + ए + य = देयम्। गा< गेयम्। पा< पेयम्। स्था> स्थेयम्। हा> हेयम्।

(३) इसी प्रकार से चि> चेयम्। जि> जेयम्। नि> नेयम्। यहाँ इ और ई को गुण होकर ए हो गया।

(४) उ और ऊ को गुण ओ होकर अव् आदेश हो जाता है, जैसे—श्रू—**श्रव्यम्**। हु—**हव्यम्**। सु—**सव्यम्**। भू—**भव्यम्**।

(५) जिन धातुओं के अन्त में पवर्ग का कोई वर्ण हो तथा उपधा में अ हो तो उससे यत् (य) प्रत्यय होता है, जैसे—शप् + य = **शप्यम्**। लभ् + य = **लभ्यम्**।

(६) हन् धातु से यत् होकर हन् को वध् आदेश होता है[4], जैसे हन् + य। हन् को वध् आदेश होकर वध् + य = **वध्यः**।

(७) शक् और सह् धातु से यत् प्रत्यय होता है, जैसे—शक् + य = **शक्यम्**। सह् + य = **सह्यम्**।

कुछ यत् प्रत्यय निष्पन्न रूप छात्रों की सुविधा के लिये दिये जा रहे हैं—

धातु	**अप्रत्ययान्त रूप**	**अर्थ**
अधि + ई	अध्येयम्	पढ़ने योग्य—पढ़ना चाहिये
अ + ख्या	आख्येयम्	कहने योग्य—कहना चाहिये।

---

१. ईद्यति।
२. सार्वधातु कार्धधातुकयोः।
३. पोरदुपधात्।
४. हनो वध लिङि।
५. शकिसहोश्च।

धातु	अप्रत्ययान्त रूप	अर्थ
उप + मा	उपमेयम्	उपमा देने योग्य, उपना देनी चाहिये।
क्री	क्रेयम्	खरीदने योग्य—खरीदना चाहिये।
क्षि	क्षेयम्	नष्ट होने योग्य—नष्ट होना चाहिये।
गै	गेयम्	गाने योग्य—गाना चाहिये।
घ्रा	घ्रेयम्	सूंघने योग्य—सूंघना चाहिये।
चि	चेयम्	चुनने योग्य—चुनना चाहिये।
जि	जेयम्	जीतने योग्य—जीतना चाहिये।
ज्ञा	ज्ञेयम्	जानने योग्य—जानना चाहिये।
दा	देयम्	देने योग्य—देना चाहिये।
ध्यै	ध्येयम्	ध्यान देने योग्य—ध्यान देना चाहिये।
नी	नेयम्	ले जाने योग्य—ले जाना चाहिये।
पा	पेयम्	पीने योग्य—पीना चाहिये।
भू	भव्यम्	होने योग्य—होना चाहिये।
मा	मेयम्	नापने योग्य—नापना चाहिये।
वि—धा	विधेयम्	विधान योग्य—विधान करना चाहिये।
श्रु	श्रव्यम्	सुनने योग्य—सुना जाना चाहिये।
स्था	स्थेयम्	ठहरने योग्य—ठहरना चाहिये।
हु	हव्यम्	हवन करने योग्य—हवन किया जाना चाहिये।

६. क्त, ७. क्वतु

भूतकाल अर्थ[1] में धातु से क्त और क्तवतु कृत् प्रत्यय होते हैं। दोनों का क्रमशः 'त' और तवत्' शेष रहता है। क्त प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य तथा क्तवतु प्रत्यय कर्तृ वाच्य में होते हैं, जैसे—क्त—**मया भोजनं भुक्तम्**। क्तवतु—अहं भोजनं कृतवान्।

क्त—क्त प्रत्यय सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में होता है। तब कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया, लिङ्ग में वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होंगे, न कि कर्त्ता के अनुसार होंगे, जैसे—

(क) रामेण इतिहासः पठितः, (ख) कृष्णेन गीते पठिते, (ग) गोविन्देन शास्त्राणि पठितानि।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि कर्त्ता—राम, कृष्ण और गोविन्द के लिङ्ग, वचन और विभक्ति का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

कर्म **'इतिहास'** के अनुसार ही **'पठित'** क्रिया पुल्लिङ्ग प्रथमा विभति एकवचन में है। कर्म **'गीते'** के अनुसार ही **'पठिते'** क्रिया स्त्रीलिङ्ग प्रथमा विभक्ति द्विवचन में है। कर्म **'शास्त्राणि'** के अनुसार ही क्रिया **'पठितानि'** नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन की प्रयुक्त है।

---

१. क्त, क्वतु निष्ठा।

अकर्मक धातु से क्त होने पर कर्त्ता तृतीया विभक्ति में और क्रिया नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होगी, जैसे—

त्वया एधितव्यम्—यहाँ कर्त्ता 'त्वया' 'तृतीया' विभक्ति में तथा क्रिया '**एधितव्यम्**' नपुंसकलिङ्ग एकवचन की है। यहाँ कर्म का सर्वथा अभाव है।

गत्यर्थक धातुओं[1], अकर्मक धातुओं श्लिष् (आलिंगन करना), शीङ् (लेटना, सोना), स्था (ठहरना), आस् (बैठना), वस् (रहना), जन्, रूह् और जृ (बुड्ढा होना या पुराना होना) में क्त प्रत्यय कर्तृ वाच्य में होता है, जैसे—गृहं गतः। **सः ग्रामं प्राप्तः। सः मृतः। हरि रमामाश्लिष्टः। सः शेषमधिशयितः।**

अकर्मक—स गृहं गतः। सः ग्रामं प्राप्तः। सः मृतः। मतोऽहं कलिङ्गान्। जलं पातु' यमुना कच्छमवतीर्णाः।

श्लिष्—हरि रमामाश्लिष्टः। शिवः पार्वतीमाश्लिष्टः।

शीङ्—शेषमधिशयतिः विष्णुः। **स्था**—स शेषमाधिशयतिः।

आस्—भक्तः शिवमुपासितः। **वस्**—नन्दकुमारः अत्र उशितः। **जन्**—राममनुजातः। **रुह्**—वृक्षमारूढः। **जृ**—श्री रामकृपालः विश्वमनुजीर्थः।

उर्पयुक्त सभी वाक्यों में कर्त्ता प्रथमा विभक्ति, कर्म द्वितीया में तथा क्रिया कर्त्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

मन्, बुद्ध, पूजा इन अर्थों वाली अन्य धातुओं से क्त प्रत्यय वर्तमान काल में होता है[2]। इसके साथ षष्ठी विभक्ति भी होगी, जैसे—**राज्ञां मतः, राज्ञां बुद्धः।**

राज्ञां मतः—राजाओं द्वारा सम्मानित अथवा पूजित।

कभी-कभी क्त प्रत्यय नपुंसकलिङ्ग भाववाचक शब्द बनाने के लिए भी प्रयुक्त होता है[3], जैसे—**जल्पितम्** (बोलना) **शायितम्** (सोना), **हसितम्** (हंसना) इसी प्रकार से **गतम्**, **स्थितम्** (अर्थात् स्थानम्), **कस्येदमालिखितम्** (यह किसका चित्र है ?)।

क्त प्रत्ययान्त बनाने के लिये निम्न नियम ध्यातव्य हैं—

(१) धातु को गुण और वृद्धि नहीं होती, जैसे—कृ > कृतः। हृ > हृतः। धृ > धृतः। भृ > भृतः।

(२) सेट् धातु में ई जुड़ेगा अनिट् में नहीं जुड़ेगा।

(३) धातु के अन्तिम द् और र् के बाद क्त के त को न हो जाता है तथा धातु के द को भी न हो जाता है[4], जैसे—र् + त = र्ण। द् + त = न्न। दीर्घ ॠ को ईर्। पृ को पूर् जैसे—शृ > शीर्णः। शृ के ॠ को ईर् + श् + ईर् + त। श + र + त र्ण = शीर्णः। पृ + त् = पूर्णः।

---

१. गत्यर्थाकर्मकाश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ३/४/७२।

२. मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यः।

३. नपुसके भावे क्तः।

४. लदाभ्यां निष्ठाते नः पूर्वेध्यश्च दः।

(४) धातु के अन्तिम द् और त् को न् का उदाहरण—

भिद् + त = भिन्नः। छिद् + त = छिन्नः। अद् + त = अन्नः। प्रसन्नः, विषण्णः, आसन्नः आदि।

(५) मा, स्था, गा, पा, और हा के आ को ई हो जाता है[1], जैसे—मा + क्त = मितः। स्था + क्त = स्थितः। गा + क्त = गीतः। पा + क्त = पीतः।

(६) दो (दा), सो (सा), मा, स्था इन धातुओं के आ को इ हो जाता है[2] जैसे—दा + त = दितः। अव + सः + त = अवसितः। परि + मात = परिमितः। स्था + त = स्थितः।

(७) यम्, रम्, नम्, हन्, मन्, वन् और तनादिगणी धातुओं के म् और न् का लोप होता है[3], जैसे—यम् + त = यतः। सम् + यम् + त = संयतः। रम् + त = रतः। वि + रम् + त = विरतः। नम् + त = नतः। प्र + नम् + त = प्रणतः। गम् + त = गतः। आ + गम् + त = आगतः। हन् + त = हतः। मन् + त = मतः। सम् + मन् + त = संमतः। तन् + त = ततः। वि + तन् + त = विततः।

(८) धातु की उपधा के न् का लोप होता है, यदि धातु की इ का लोप हुआ तो न् का लोप नहीं होगा[4], जैसे—बन्ध् + त = बद्धः। ध्वंस् + त = ध्वस्तः। स्रस् + त = स्रस्तः। दंश + त = दष्टः।

(९) जन् सन् और खन् धातुओं के न् को आ होता है[5], जैसे—जन् + त = जातः। सन् + त = सातः। खन् + त = खातः।

(१०) संयोगादि (आरम्भ में संयुक्त वर्ण) और यण् वाली (य, व, र, ल, से युक्त) अकारान्त धातु के बाद त को न होता है[6], जैसे—ग्ला + त = ग्लानः। म्ला + त = म्लानः। ग्ला, म्ला ये सभी संयोगादि हैं क्योंकि प्रारम्भ में ही ग् और ला का म् और ला का संयोग है द्रा + त = द्राणः। यहाँ धातु यण (र्) वाली है।

(११) जिन धातुओं में से ओ हटता है उनके बाद त को न होता है[7], जैसे—भुजो + त = भुग्नः।

(१२) वच्, स्वप् और यज् आदि हो धातुओं को सम्प्रसारण होता है। सम्प्रसारण य को इ, व को उ, र को ऋ होता है[8], जैसे—वच् + त = उक्तः। स्वप् + त = सुप्तः। यज् + त = इष्टः। वप् + त = उप्तः। वह् + त = ऊढः। वस् + त = उषितः।

---

१. घुमास्थागपाजहातिसां हलि।
२. द्युतिस्यतिमासथामित्री कति।
३. अनुदात्तोदेशवनतितनोद्यादीनामनुनासिक लोपो झलिविङ्ति।
४. अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति।
५. जनसनखनां सञ् झलोः।
६. संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः।
७. आंदितश्च।
८. वाचिस्वपियजादीनां किति।

(१३) ग्रह, ज्या, वे, व्यध्, वश्, व्यच्, प्रच्छ, भ्रज्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारन होता है[१], जैसे—गृह + त = गृहीतः। व्यध् + त = विद्धः। प्रच्छ् + त = पृष्टः। वद् + त = उदित। यहाँ र को ऋ, य को इ, व को उ सम्प्रसारण हुआ।

(१४) लू आदि निम्न २१ धातओं के बाद त को न होता है[२]। (१) लूञ, (१) स्तुन्, (३) कृञ, (४) वृज, (५) धज्, (६) श, (७) पृ, (८) वृ, (९) भृ, (१०) मृ, (११) दृ, (१२) जृ, (१३) नृ, (१४) कृ, (१५) ऋ, (१६) गृ, (१८) ज, (८१) री, (१९) ली, (२०) व्ली, (२१) प्ली, जैसे—लू + त = लुनः। स्तृ + त = स्तीर्णः, विस्तीर्णः। ज्या + त = जीनः। दु + त = दूनः।

(१५) धा धातु को हि आदेश होता है[३], जैसे—धा + त = हितम्।

(१६) पच् धातु के बाद न को व होता है[४], जैसे—पच् + त = पक्वः।

(१७) शुष् धातु के बाद त को क होता है[५], जैसे—शुष् + त—शुष्कः।

(१८) क्षै (हर्षक्षयो) धातु के बाद त को म होता है[६], जैसे—क्षै + त = क्षामः।

(१९) निम्न धातुओं के रूप इस प्रकार के हैं—अस्>भूतः। सह्>सोढुम्। वह्>ऊढः। अद्>जग्धः। क्षि>क्षीणः। निर्वा>निर्वाणः।गुह>गूढः। लीह्>लीढः। प्यै>पीनः, प्यानः।

(२०) क्त और क्तवतु प्रत्ययों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। क्त प्रत्यय के रूप पुल्लिङ्ग में राम के समान। स्त्रीलिङ्ग में आ लगाकर रमा के समान और नपुंसकलिङ्ग में गृह के समान चलते हैं, जैसे—पुल्लिङ्ग में कृतः। स्त्रीलिङ्ग में कृता। नपुंसकलिङ्ग में कृतम्।

७. क्तवतु

क्तवतु प्रत्यय भी क्त प्रत्यय के समान भूत अर्थ में ही होता है। इसका तवत् शेष रहता है। इसका प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है। कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीय तथा क्रिया कर्ता के लिङ्ग, वचन, विभक्ति के अनुसार चलती है।

क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों का पुलिङ्ग रूप बनाने के लिए क्त (त) के बाद वान् जोड़ देते हैं। स्त्रीलिङ्ग में क्त (त) के बाद वती जोड़ देते हैं। नपुंसकलिङ्ग में वत् जोड़ देते हैं। इसके रूप पुल्लिङ्ग में भगवत् के समान। स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान तथा नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान चलते हैं।

छात्रों के लिए कुछ क्त और क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के पुल्लिङ्ग रूप दिये जा रहे हैं।

धातु	अर्थ	क्त	क्तवतु
अद्	खाना	जग्धः	जग्धवान्
अधि + ई	पढ़ना	अधीतः	अधीतवान्

१. ग्रहिज्यावयिव्यधिविष्टि विचतिवृश्चतिपृच्छति भृज्जतीनांङिति च।
२. ल्वादिभ्यः।
३. दधातेर्हि।
४. पचो वः।
५. शुष कः।
६. क्षायो मः।

धातु	अर्थ	क्त	क्तवतु
अस्	होना	भूतः	भूतवान्
आ + रभ्	प्रारम्भ करना	आरब्धः	आरब्धवान्
आलम्ब्	सहारा देना	आलम्बितः	आलम्बितवान्
आ + ह्वे	बुलाना	आहूतः	आहूतवान्
इष्	चाहना	इष्टः	इष्टवान्
ईक्ष्	देखना	ईक्षितः	ईक्षितवान्
कथ्	कहना	कथितः	कथितवान्
कम्	चाहना	कान्तः	कान्तवान्
कम्प्	काँपना	कम्पितः	कम्पितवान्
कुप्	गुस्सा करना	कुपितः	कुपितवान्
कूर्द्	कूदना	कूर्दितः	कुर्दितवान्
कृ	करना	कृतः	कृतवान्
कृष्	खींचना	कृष्टः	कृष्टवान्
क्रन्द्	चिल्लाना	क्रन्दितः	क्रन्दितवान्
क्रम्	निकलना	क्रान्तः	क्रान्तवान्
क्री	खरीदना	क्रीतः	क्रीतवान्
क्रीड	खेलना	क्रडितः	क्रीडितवान्
क्षिप्	फेंकना	क्षिप्तः	क्षिप्तमान्
खन्	खोदना	खातः	खातवान्
खाद्	खाना	खादितः	खादितवान्
गण्	गिनना	गणितः	गणितवान्
गम्	जाना	गतः	गतवान्
गर्ज्	गर्जना	गर्जितः	गर्जितवान्
गै	गाना	गीतः	गीतवान्
ग्रस	ग्रसना	ग्रस्तः	ग्रसितवान्
ग्रह	पकड़ना	ग्रहीतः	गृहीतवान्

अब केवल पुल्लिङ्ग क्त प्रत्ययान्त रूप नीचे दिये जा रहे हैं—

धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप	धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप
घ्रा	घ्रातः, घ्राणः	चिर्	चरितः
चल्	चलितः	चि	चितः
चिन्त्	चिन्तितः	चुर्	चोरितः
चेष्ट्	चेष्टितः	छिद्	छिन्नः
जन्	जातः	ज़ि	जितः

धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप	धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप
जीव्	जीवितः	जृ	जीर्णः
ज्ञा	ज्ञातः	ज्वल्	ज्वलितः
तन्	ततः	तप्	तप्तः
तुष्	तुष्टः	तृप्	तृप्तः
त्यज्	त्यक्तः	त्रै	त्रातः
दश्	दष्टः	दण्ड्	दण्डितः
दम्	दान्तः	दय्	दयितः
दह्	दग्धः	दा	दत्तः
दिव्	द्यूतः, द्यूनः	दिश्	दिष्टः
दीप्	दीप्तः	दुह्	दुग्ध
दृश्	दृष्टः	दो	दितः
द्युत्	द्योतितः	धा	हितः
धाव्	धावितः	धृ	धृतः
ध्मा	ध्मातः	ध्यै	ध्यातः
ध्वस्	ध्वस्तः	नम्	नतः
नश्	नष्टः	निन्द्	निन्दितः
नी	नीतः	नृत्	नृतः
पच्	पक्तः	पठ्	पठितः
पत्	पतितः	पट्	पन्नः
क्लाय्	क्लायितः	पा	पीतः
पाल्	पालितः	पुष्	पुष्टः
पूज्	पूजितः	पृ	पूर्णः
प्रच्छ्	पृष्टः	प्रथ्	प्रथितः
प्र + हि	प्रहितः	प्रेर्	प्रेरितः
बन्ध्	बद्धः	बुध्	बुद्धः
ब्रू	उक्तः	भक्ष्	भक्षितः
भज्	भक्तः	भञ्ज्	भग्नः
भण्	भणितः	भाष्	भाषितः
भिद्	भिन्नः	भी	भीतः
भुज्	भुक्तः	भू	भूतः
भृ	भृतः	भ्रम्	भ्रान्तः
मद्	मत्तः	मन्	मतः
मन्थ्	मन्थितः	मा	मितः

धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप	धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप
मिल्	मिलितः	मुच्	मुक्तः
मुद्	मुदितः		
मुह्, मुग्धः	मूढः	मूर्च्छ्	मूर्छितः
मृज्	मृष्टः	यज्	इष्टः
यत्	यतितः	यम्	यतः
या	यातः	याच्	याचितः
युज्	युक्तः	युद्ध्	युद्धः
रक्ष्	रक्षितः	रच्	रचितः
रञ्ज्	रक्तः	रम्	रतः
रुच्	रुचितः	रुद्	रुदितः
रुध्	रुद्धः	रुह्	रुदितः
लभ्	लब्धः	लष्	लषितः
लिख्	लिखितः	लिह्	लीढः
लुभ्	लुब्धः	वच् (ब्रू)	उक्तः
वद्	उदितः	वन्द्	वन्दितः
वप्	उप्तः	वस्	उषितः
वह्	ऊढः	वा	वातः
वि + कस्	विकसितः	विद्	विदितः
विद्	वेदितः	विश्	विष्टः
वृत्	वृत्तः	वृध्	वृद्धः
वे	उतः	व्यथ्	व्यथितः
व्यध्	विद्धः	शक्	शक्तः
शङ्क्	शङ्कितः	शप्	शप्तः
शम्	शान्तः	शास्	शिष्टः
शिक्ष्	शिक्षितः	शी	शायितः
शुच्	शुचितः	शुभ्	शोभितः
शुष्	शुष्कः	शृ	शीर्णः
श्रि	श्रितः	श्रु	श्रुतः
श्लिष्	श्लिष्टः	सद्	सन्नः
सन्	सातः	सह्	सोढः
साध्	साधितः	सिच्	सिक्तः
सिध्	सिद्धः	सिव्	स्यूतः
सृज्	सृष्टः	सेव्	सेवितः

धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप	धातु	क्त प्रत्ययान्त रूप
सो	सितः	स्तु	स्तुतः
स्था	स्थितः	स्ना	स्नातः
स्निह्	स्निग्धः	स्पृश्	स्पृष्टः
स्वप्	सुप्तः	स्वाद्	स्वादितः
स्विद्	स्विन्नः	हन्	हतः
हस्	हसितः	हा	हीनः
हा	हानः	हिंस्	हिंसितः
हु	हुतः	हृ	हृतः
हृष्	हृष्टः	ह्रस्	ह्रसितः
ह्री,	ह्रीतः ह्रीणः	ह्वे	हुतः

८. शतृ और ९. शानच्

जब किसी वाक्य में दो कार्य साथ-साथ हो रहे हों तो निरन्तर होने वाले अपूर्ण कार्य में शतृ और शानच् प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों का प्रयोग होता है, जैसे—**सः चलन् खादति** (वह चलता हुआ खा रहा है)। यहाँ पर वही चलना क्रिया निरन्तर हो रही है, और वह अपूर्ण भी है, अतः उसमें शतृ प्रत्यय हुआ।

जब कार्य की समकालीनता न पाई जाती हो तो इनमें शतृ प्रत्ययान्त शब्द का प्रयोग नहीं होता, जैसे—

पर्वतम् आरुह्यते कञ्चित् कालं व्यश्रम्यन्।

(वे लोग पर्वत पर चढ़कर कुछ काल के लिए विश्राम करने लगे)।

यहाँ पर्वत पर चढ़ने और विश्राम करने का समय एक नहीं है। अतः आरुह्य में शतृ प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ, अपितु ल्यप् (क्त्वा) का प्रयोग हुआ है।

शतृ और शानच् प्रत्यय विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, अतः उनके लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य के लिङ्ग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं, जैसे—

हसन्तः बालकः गच्छन्ति।

यहाँ विशेष्य 'बालक' पुल्लिङ्ग, बहुवचन तथा प्रथमा कारक का रूप है तो शतृ प्रत्ययान्त विशेषण 'हसन्तः' भी पुल्लिङ्ग, बहुवचन तथा प्रथमा कारक का रूप है।

इसी प्रकार से—

सः कूर्दमानः गच्छति (वह कूदता हुआ जाता है)।

यहाँ शानच् प्रत्यान्त **कूर्दमानः** विशेषण का लिङ्ग, वचन, कारक विशेष्य **सः** (वह) के पुल्लिङ्ग, एकवचन तथा प्रथमा कारक के अनुसार है।

यह ध्यान देने की बात है कि शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, स्यतृ, स्यमान, क्वसु, कानच्, तव्य, अनीयर्, ण्यत् प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं।

परस्मैपद की धातुओं से शतृ तथा आत्मनेपद की धातुओं से शानच् प्रत्यय होता है, जैसे—

पत् + अन् = पतन्। लभ + आन = लभमानः।

यह पत् धातु परस्मैपदी है अतः उससे शतृ प्रत्यय हुआ तथा लभ् धातु आत्मनेपदी है तो उससे शानच् प्रत्यय हुआ।

हिन्दी में शतृ और शानच् का अर्थ है—रहा है, रहे हैं, रहा था, हुआ, हुए आदि।

आचार्य पाणिनि के अनुसार प्रथमा कारक में शतृ और शानच् का प्रयोग नहीं होता, जैसे—

स पठन् अस्ति न कहकर **स पठति** ही कहना चाहिए। परन्तु प्रथमा विभक्ति में भी इनके रूप प्रचलित हैं। शतृ—परस्मैपदी धातुओं से शतृ प्रत्ययान्त रूप बनाने के लिए नियम निम्न प्रकार से हैं—

शतृ प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग रूप बनाने का प्रकार—जैसे—पठ् धातु के लट् लकार वहुवचन में पठन्ति रूप बनता है। इसमें से अन्तिम 'इ' और बीच के 'न' को (यदि हो तो) हटा दें, तो पठत् शतृ प्रत्यय का रूप बन जाता है। इसी प्रकार से भू > भवन्ति, शतृ > भवत्। अस > सन्ति, शप् > सत्। गम > गच्छन्ति, गच्छत्। कृ > कुर्वन्ति, कुर्वत्। दा > ददति, ददत्। शतृ प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में पठत् के तुल्य चलते हैं। नपुंसकलिङ्ग के रूप जगत् शब्द के समान चलते हैं।

शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग बनाने का प्रकार—शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग रूप बनाने का तरीका यह है कि भ्वादी दिवादि और चुरादि गण की धातु के लट् लकार बहुवचन के रूप में ह्रस्व 'इ' कर देते है, तो शतृ प्रत्यय का प्रथमा एकवचन रूप बन जाता है, जैसे—गम् धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में **'गच्छन्ति'** रूप बनता है। इसके ह्रस्व 'इ' को दीर्घ 'ई' कर देने से 'गच्छन्ती' हो गया। **'गच्छन्ती'**—यह स्त्रीलिङ्ग एकवचन में बनता है। इसी प्रकार भान्ति > भान्ती। तुदन्ति > तुदन्ती।

यदि धातु अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि और क्रयादि गण की है तो धातु के लट् लकार बहुवचन के रूप में से न् को हटाकर ह्रस्व 'इ' को दीर्घ कर देते हैं, जैसे—श्रु धातु का लट् लकार प्रथमा बहुवचन में **'श्रुण्वन्ति'** रूप बनता है। इससे न को हटाकर ह्रस्व 'इ' को दीर्घ 'ई' कर देने से **'श्रुण्वती'** रूप शेष रहा। यह शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन है। इसी प्रकार से रुदन्ति—**रुदती**। कुर्वन्ति—**कुर्वती**। क्रीडन्ति—**क्रीडती** आदि।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए कतिपय शतृ प्रत्ययान्त धातुओं के पुल्लिङ्ग रूप आगे दिये जा रहे हैं—

धातु	**पुल्लिङ्ग रूप**	**धातु**	**पुल्लिङ्ग रूप**
अद्	अदन्	गम्	गच्छन्
अर्च्	अर्चन्	गर्ज	गर्जन्

धातु	पुल्लिङ्ग रूप	धातु	पुल्लिङ्ग रूप
अस्	सन्	गृ	गिरन्
आप्	आप्नुवन्	गै	गायन्
आ + रुह्	आरोहन्	घ्रा	जघ्रन्
आ + ह्वे	आह्वयम्	चर्	चरन्
इ	यन्	चल्	चलन्
इष्	इच्छन्	चि	चिन्वन्
कुप्	कुप्यन्	छिद्	छिन्दन्
कृष्	कर्षन्	जप्	जपन्
क्रन्द्	क्रन्दन्	जीव्	जीवन्
क्रम्	क्राम्यन्	ज्वल्	ज्वलन्
क्रीड्	क्रीडन्	तप्	तपन्
क्रुध्	क्रुध्यन्	तुद्	तुदन्
क्षम्	क्षाम्यन्	तुष्	तुष्यन्
क्षिप्	क्षिपन्	तृ	तरन्
खन्	खनन्	त्यज्	त्यजन्
खाद्	खादन्	दण्ड्	दण्डन्
गण्	गणयन्	दह्	दहन्
दिव्	दीवयन्	वद्	वदन्
दिश्	दिशन्	वस्	वसन्
दुह्	दुहन्	वह्	वहन्
दृश्	पश्यन्	विश्	विशन्
धाव्	धावन्	वृष्	वर्षन्
धृ	धरन्	व्यध्	विध्यन्
ह्यै	ह्यायन्	शक्	शक्नुवन्
नम्	नमन्	शप्	शपन्
नश्	नश्यन्	शम्	शाम्यन्
निन्द्	निन्दन्	शुष्	शुष्यन्
नृत्	नृत्यन्	श्रि	श्रयन्
पठ्	पठन्	श्रु	शृण्वन्
पत्	पतन्	सद्	सीदन्
पा	पिवन्	सिच्	सिञ्चन्
पाल्	पालयन्	सिव्	सीव्यन्
पूज्	पूजयन्	सृ	सरन्

धातु	पुल्लिङ्ग रूप	धातु	पुल्लिङ्ग रूप
पृच्छ्	पृच्छन्	राज्	राजन्
प्रेर्	प्रेरयन्	सृप्	सर्पन्
बन्ध्	बध्नन्	स्तु	स्तुवन्
भक्ष्	भक्षयन्	स्था	तिष्ठन्
भज्	भजन्	स्पृश	स्पृशन्
भिद्	भिन्दन्	स्मृ	स्मरन्
भृ	भरन्	स्वप्	स्वपन्
भू	भवन्	हन्	हनन्
भ्रम्	भ्रमन्/भ्रामयन्	हस्	हसन्
मिल्	मिलन्	हा	जहन्
रक्ष्	रक्षन्	हिंस्	हिंसन्
रच्	रचयन्	हु	जुहवन्
रुद्	रुदन्	हृ	हरन्
लष्	लषन्	हृष्	हृष्यन्
लिख्	लिखन्	ह्वे	ह्वयन्
लिह्	लिहन्		

९. शानच्

आत्मनेपदी धातुओं से लट् के स्थान पर शानच् होता है। उभयपदी धातुओं से शतृ और शानच् दोनों होते हैं। शानच् का आन् शेष रहता है।

जिन धातुओं के अन्त में 'अ' विकरण लगता है वहाँ अ और आन् के बीच में म् लग जाता है अर्थात् अ + आन = मान, जैसे—यज्—**यजमानः**, ईक्ष्—**ईक्ष्माणः**।

शानच् प्रत्यान्त रूप बनाने का सरल नियम है कि आत्मनेपदी क्रिया के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप में से 'ते' को निकालकर अ + आन = मान लगा देते हैं, जैसे—कम्पते—**कम्पमानः**। गाहते—**गाहमानः**। पठते—**पठमानः**।

आस् धातु में आन को ईन होकर आसीनः रूप बनता है।

यदि धातु के अन्त में 'अ' विकरण नहीं लगता तो उसमें मान न जुड़कर आन ही जुड़ता है, जैसे—शी—**शयानः**। कृ—**कुर्वाणः**। धा—**दधानः**।

शानच्, शतृ प्रत्यान्त शब्दों का प्रयोग स्वभाव ममोवृत्ति, आयु का कोई मापदण्ड, योग्यता या किसी कार्य करने की क्षमता आदि अर्थों का बोध कराने में होता है, जैसे—

स्वभाव अर्थ में—भोगं भुञ्जानः—भोगने का अभ्यरत।

आयु अर्थ में—कवचं बिभ्राणः—कवच पहने हुए अर्थात् जिस आयु में कवच पहना जाता है, उस आयु का।

शक्ति अर्थ में—शत्रु विहमानः—शत्रु को मारने में समर्थ।

शानच् प्रत्ययान्त के रूप पुल्लिङ्ग रामवत्, स्त्रीलिङ्ग में आ लगाकर रमावत् और नपुंसकलिङ्ग में गृहवत् चलेंगे।

शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के तीनों लिङ्गों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

आत्मनेपद धातुएँ

धातु	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
आधि + ई	अधीयानः	अधीयाना	अधीयानम्
आ + रभ्	आरभमाणः	आरभमाणा	आरभमाणम्
आ + लम्ब	आलम्बमानः	आलम्बमाना	आलम्बमानम्
आश्	आसीनः	आसीना	आसीनम्
ईक्ष्	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा	ईक्षमाणम्
ईह्	ईहमानः	ईहमाणा	ईह्मानम्
उड् + डी	उड्ड्यमानः	उड्ड्यमाना	उड्ड्यमानम्
कम्प्	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
कूर्द	कूर्दमानः	कूर्दमाना	कूर्दमानम्
गाह	गाहमानः	गाहमाना	गाहमानम्
ग्रस्	ग्रसमानः	ग्रसमाना	ग्रसमानम्
चेष्ट	चेष्टमानः	चेष्टमाना	चेष्टमानम्
जन्	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
त्रै	त्रायमानः	त्रायमाणा	त्रायमाणम्
त्वर्	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणण्
दय्	दयमानः	दयमाना	दयमानम्
द्युत्	द्योतमानः	द्योतमाना	द्योतमानम्
ध्वंस्	ध्वंसमानः	ध्वंसमाना	ध्वंसमानम्
पलाय्	पलायमानः	पलायमाना	पलायमानम्
प्रथ्	प्रथमानः	प्रथमाना	प्रथमानम्
बाध्	बाधमानः	बाधमाना	बाधमानम्
भास्	भासमानः	भासमाणा	भासमानम्
भिक्ष्	भिक्षमानः	भिक्षमाना	भिक्षमाणम्

उपयपदी धातुयें

उभयपदी (परस्मैपदी, आत्मनेपदी) धातुओं से शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय होते हैं। कतिपय रूप प्रस्तुत हैं—

धातु	पुल्लिङ्ग	धातु	पुल्लिङ्ग
कथ्	कथयन्	दा	ददत्
	कथयमानः		ददानः

धातु	पुल्लिङ्ग	धातु	पुल्लिङ्ग
कृ	कुर्वन्	धा	दधत्
	कुर्वाणः		दधानः
क्री	क्रीणन्	नी	नयन्
	क्रीणानः		नयमानः
ग्रह्	गृह्णन्	पच्	पचन्
	गृह्णान्		पचमानः
चि	चिन्वन्	ब्रू	ब्रूवन्
	चिन्वानः		ब्रूवाणः
चिन्त्	चिन्तयन्	मुज्	मुञ्जन्
	चिन्तयमानः		मुञ्जानः
चुर्	चोरयन्	मुच्	मुञ्चन्
	चोरयमाणः		मुञ्चमानः
ज्ञा	जानन्	यज्	यजन्
	जानानः		यज्ञमानः
तन्	तन्वन्	युज्	युञ्जन्
	तन्वानः		युञ्जानः
रुध्	रुन्धन्	वह्	वहन्
	रुन्धानः		वाहमानः
श्रि	श्रयन्	सु	सुन्वन्
	श्रयमाणः		सुन्वानः
हृ	हरन् / हरमाणः		

उपर्युक्त धातुओं से शतृ और शानच् कर्तृ वाच्य में हुये हैं और ये कर्त्ता की क्रिया कहलाते हैं।

कर्मवाच्य में भविष्यत् अर्थ में धातुओं से शानच् (स्यमान) प्रत्यय होता है। शानच् प्रत्ययान्त शब्द कर्म के विशेषण होते हैं, जैसे—**अस्माभिः अद्यमानानि फलानि**।

यहाँ कर्म **'फलानि'** विशेष्य है और उसका विशेषण शतृ प्रत्यय निष्पन्न **'अद्यमानानि'** रूप है।

भाववाच्य और कर्मवाच्य में लट्लकार में ष् प्रत्ययान्त अंग से मान लगेगा। विशेषण होने से इसके रूप भी विशेष्यानुसार ही चलते हैं, जैसे—

बुध् + य + मान = **बुध्यमान**—जाना जाता हुआ।

अद् + य + मान = **अद्यमान**—खाया जाता हुआ।

हन् + य + मान = **हन्यमान**—मारा जाता हुआ।

यज् + य + मान = **यज्यमान**—पूजा किया जाता हुआ।

पठ् + य + मान् = **पठ्यमान**—पढ़ा जाता हुआ।

नी + य + मान = **नीयमान**—ले जाया जाता हुआ।

१०. तव्यत्

तव्यत्तव्यानीयर—३/१/९६ इस सूत्र का अर्थ है कि तव्यत्, तव्य, अनीयर प्रत्यय होते हैं किन्तु प्रश्न उठता है कि प्रत्यय होते किसके साथ हैं ? यह ज्ञान इस सूत्र से नहीं होता इसकी जानकारी के लिये **धातोः** ३-१-९१ की अनुवृति होती है। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होता है। धातु से तव्यत् होता है। तव्यत् में **हलन्त्यम्** सूत्र से अन्तिम तकार इत्संज्ञक है। अतः तित् होने से यह **तित्स्वरितम्** ६/१/१८५ सूत्र से स्वरित हो जाती है। **कृत्या** ३/१/९५ सूत्र से कृत्य संज्ञा होती है। अतः **तयोरेव कृत्य-क्त-खलर्थाः** ३/४/७० परिभाषा से यह प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में और अकर्मक धातुओं से भाव में होते हैं।

उदाहरणार्थ—**एध** धातु अकर्मक है अतः इससे भाव में तव्यत् प्रत्यय होकर **एधतव्य** रूप बनता है।

एधतव्य में आर्धधातुक तकार परे होने के कारण **आर्धधातुकस्य कस्येड् वलादे**। ०/२/३५ सूत्र से इट् होकर, एध + इ + तव्य = एधितव्य रूप बनता है इस स्थिति में एधितव्य की **कृत्तद्धित समासाश्च** सूत्र से प्रतिपदिक संज्ञा होती है। बन भाव में सामान्य नपुंसकलिङ्ग एकवचन होने के कारण **एधितव्यम्** रूप बनता है।

११. अनीयर

संस्कृत भाषा में लाधव लाने के लिये इन कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है। हिन्दी या अंग्रेजी में जिन भावों को प्रकट करने के लिये कई-कई शब्दों की आवश्यकता होती है, उन्हें संस्कृत में कृत्य प्रत्यय द्वारा एक शब्द में कह दिया जाता है, जैसे—कह देना चाहिये, **वचनीयः**।

अनीयर् भी कृत्य प्रत्यय है। यह **'चाहिये'** अर्थ में प्रयुक्त होता है। अनीयर का अनीय शेष रहता है। यह प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में तथा अकर्मक धातुओं से भाव में होता है।

धातु के अनीयर (अनीय) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के ये निम्नलिखित नियम हैं—

(१) सामान्यता धातु में कोई अन्तर नहीं पड़ता वह अपने मूल रूप में ही रहती है। बीच में इ नहीं लगती, जैसे—गम् + अनीय = **गमनीयः**। हस् + अनीय = **हसनीयः**। पठ् + अनीय = **पठनीयः**। पा + अनीय = **पानीयः**।

(२) धातु के अन्तिम इ, ई को ए। उ, ऊ को ओ। ऋ, ॠ को अर् गुण होता है।

(३) प अन्त वाली धातु तथा लपधा के ह्रस्व इ, उ, ऋ को भी क्रमशः ए, ओ, अर् गुण होगा[२], जैसे—जि + अनीय। ए गुण जै + अनीय। जकारोत्तरवर्ती ए को अय आदेश। ज्

---

१. सार्वधातुकार्धधातुकयोः।

२. पुगन्तलघूपधस्य च।

+ अय आदेश। ज् + अय् + अनीय = जयनीय। नी > नयनीय। श्रु > श्रवणीय। भू > भवनीय। कृ > करणीय।

(४) अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं, अतः इनके लिये >, वचन और विभक्ति भी विशेष्य के अनुसार होती हैं। इनके पुल्लिङ्ग में रूप राम की तरह स्त्रीलिङ्ग में रमा की तरह तथा नपुंसकलिङ्ग में पुस्तक की तरह चलते हैं।

कतिपय अनीयर् प्रत्ययान्त शब्दों के पुल्लिङ्ग में रूप दिये जा रहे हैं—

धातु	अर्थ	पुल्लिङ्ग
दा	देने योग्य	दानीयः
चि	संग्रह के योग्य	चयनीयः
नीः	ले जाने योग्य	नयनीयः
घु	सुनने योग्य	श्रवणीयः
भू	होने योग्य	भवनीयः
कृ	करने योग्य	करणीयः
बुध्	जानने योग्य	बोधनीयः
मुच्	छोड़ने योग्य	मोचनीयः
मृज्	स्वच्छ करने योग्य	मार्जनीयः
सृज्	बनाने योग्य	सर्जनीयः
भ्रस्ज्	भुनने योग्य	भर्जनीयः, भृज्जनीयः
धातु	**अर्थ**	**पुल्लिङ्ग**
भिद्	तोड़ने योग्य	भेदनीयः
निन्द्	निन्दा के योग्य	निन्दनीयः
गुह्	छिपाने योग्य	गूहनीयः
कथ्	कहने योग्य	कथनीयः
चुर्	चुराने योग्य	चोरणीयः

तद्धित प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के योग से संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण से अन्य प्रकार की संज्ञायें, सार्वजनिक विशेषण अथवा विशेषण बनाये जाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय प्रतिपदकों (शब्दों) में ही जोड़े जाते हैं, धातुओं में नहीं।

तद्धित प्रत्यय लगाते समय निम्न नियमों को ध्यान रखना आवश्यक होता है—

(१) 'तद्धितेष्वचामादेः'—जिन तद्धित प्रत्ययों में ञ् और ण् की इत्संज्ञा होती है, उन प्रत्ययों को जोड़ते समय आदि स्वर की वृद्धि हो जाती है। वृद्धि में अ के स्थान पर 'आ' इ, ई के स्थान पर 'ए', उ, ऊ के स्थान पर 'औ' और ऋ के स्थान पर 'आर' आदेश होता है।

(२) क् के इत् होने पर भी आदि स्वर की वृद्धि होती है। यथा—वर्षा + ठक् = वार्षिकः रूप बनता है।

(३) स्वर तथा य से आरम्भ होने वाले प्रत्ययों के पूर्व शब्दों के अन्तिम स्वर में विकास उत्पन्न होता है अर्थात् अ आ इ ई का लोप हो जाता है, उ ऊ के स्थान पर गुण (ओ) हो जाता है और औ के स्थान पर सन्धि हो जाती है।

(४) नकारान्त शब्दों के आगे व्यञ्जन से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय जोड़ने पर प्रायः 'अन्' भाग का लोप हो जाता है।

(५) 'ठस्येकः'—प्रत्यय में आये हुए 'ठ' के स्थान पर '**इक**' होता है।

(६) 'युवोरनाकौ'—प्रत्यय के यु, वु के स्थान पर **अन** और **अक** हो जाते हैं।

(७) '**आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्**' प्रत्यय के आदि में आये हुए फ, ढ, ख, छ, घ के स्थान पर क्रमशः **आयन्, एय, ईन, इन, ईय, इय** हो जाते हैं।

(८) प्रत्यय के अन्त में आया हुआ हल् वर्ण इत्संज्ञक होता है और यह केवल वृद्धि या गुण आदि को सूचित करता है।

(क) मतुप् प्रत्यय

तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ५/२/९४

भूमनिन्दाप्रशंसासु नित्योगेऽतिशायने। सम्बन्धेऽस्ति विवक्षायां भवन्ति मतुबादयः। वा०।

इसके पास है या इसमें है, इन अर्थों में मतुप् प्रत्यय होता है। 'वान्' 'वाला' (कोचवान्, मिठाई वाला) से जो अर्थ सूचित किया जाता है, उसी अर्थ का बोध करने के लिये 'मतुप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

गो + मतुप् (मत्) गोमान् (गावः अस्य सन्ति इति)।

किसी वस्तु के बाहुल्य, निन्दा, प्रशंसा नित्योग, अधिकता अथवा सम्बन्ध का बोध कराने के लिये मत्वर्थीय प्रत्यय लगाते हैं। यथा—

बाहुल्य अर्थ में—गोमान् (बहुत गायों वाला)।

निन्दा—ककुदावर्तिनी कन्या (कुबड़ी बालिका) (मत्त्वर्थीय इनिः)

प्रशंसा—रूपवान् (अच्छे रूप वाला)।

नित्ययोग—क्षीरी वृक्षः (जिसमें नित्य दूध रहता है) (मत्त्वर्थीय इनिः)

अधिकता—उदरिणी कन्या (बड़े उदर वाली कन्या) (मत्त्वर्थीय इनिः)

सम्बन्ध—दण्डी (दण्ड के साथ रहने वाला साधु) (मत्त्वर्थीय इनिः)।

रसादिभ्यश्च ५/२/९५

मतुप् प्रत्यय प्रायः गुणवाची शब्दों (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि) के पश्चात् लगता है। यथा **रसवान् रूपवान्** आदि।

मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः। ८/२/९। **झयः** ८/२/१० यदि मतुप् प्रत्यय के पहले ऐसे शब्द हों जो म् या अ, आ, या पाँचों वर्गों के प्रथम चार वर्णों में अन्त होते हों या जिनकी उपधा (अन्तिम वर्ण के पूर्व वाला वर्ण) में म्, अ या आ हो तो मतुप् के म् के स्थान में व् हो जाता है। यथा किंवान्, विद्यावान्, लक्ष्मीवान् यशस्वान्, भास्वान्, तड़ित्वान् आदि। यव आदि के बाद म् को व् नहीं होता, यथा—

यवमान् भूमिवान्।

मतुप् प्रत्यय **'वाला'** अथवा **'वाली'** अर्थ में होता है। इसके पास है या इसमें है, इन अर्थों में मतुप् होता है—

धी + मतुप्	= धीमान् (बुद्धिवाला)		धीमती
फल + मतुप्	= फलवत्	फलवान्	फलवती
अग्नि + मतुप्	= अग्निमत्	अग्निमान्	अग्निमती
गति + मतुप्	= गतिमत्	गतिमान्	गतिमती
गुण + मतुप्	= गुणवत्	गुणवान्	गुणवती
बुद्धि + मतुप्	= बुद्धिमत्	बुद्धिमान्	बुद्धिमती
विद्या + मतुप्	= विद्यावत्	विद्यावान्	विद्यावती
दोष + मतुप्	= दोषवत्	दोषवान्	दोषवती
आयुस् + मतुप्	= आयुष्मत्	आयुष्मान्	आयुष्मती
श्रीमत् + मतुप्	= श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
बल् + मतुप्	= बलवत्	बलवान्	बलवती
शक्ति + मतुप्	= शक्तिमत्	शक्तिमान्	शक्तिमती
श्रद्धा + मतुप्	= श्रद्धावत्	श्रद्धावान्	श्रद्धावती
सदाचार + मतुप्	= सदाचारवत्	सदाचारवान्	सदाचारवती
निष्ठा + मतुप्	= निष्ठावत्	निष्ठावान्	निष्ठावती
विनय + मतुप्	= विनयवत्	विनयवान्	विनयवती
कीर्ति + मतुप्	= कीर्तिमत्	कीर्तिमान्	कीर्तिमती
धृति + मतुप्	= धृतिमत्	धृतिमान्	धृतिमती
क्षमा + मतुप्	= क्षमावत्	क्षमावान्	क्षमावती
धैर्य + मतुप्	= धैर्यवत्	धैर्यवान्	धैर्यवती

श्री अस्य अस्ति + मतुप्	= श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
अंशवः अस्य सन्ति	= अंशु + मतुप् = अंशुमत्	अंशुमान्	अंशुमती
भानु + मतुप्	= भानुमत्	भानुमान्	भानुमती
पितृ + मतुप्	= पितृमत्	पितृमान्	पितृमती
अश्रु + मतुप्	= अश्रुमत्	अश्रुमान्	अश्रुमती

विशेष—इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त तथा ऋकारान्त शब्दों के बाद मतुप् (मत्) तथा अकारान्त और आकारान्त शब्दों के बाद वतुप् (वत्) लगाते हैं—

ज्ञानम् अस्य अस्ति	=	ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती
धनम् अस्य अस्ति	=	धनवत्	धनवान्	धनवती
विद्या अस्य अस्ति	=	विद्यावत्	विद्यावान्	विद्यावती
दया अस्य अस्ति	=	दयावत्	दयावान्	दयावती
विद्युत् अस्य अस्ति	=	विद्युत्वत्	विद्युत्वान्	विद्युत्वती
माया अस्य अस्ति	=	मायावत्	मायावान्	मायावती
रूपम् अस्य अस्ति	=	रूपवत्	रूपवान्	रूपवती
करुणा अस्य अस्ति	=	करुणावत्	करुणावान्	करुणावती
प्रतिभा अस्य अस्ति	=	प्रतिभावत्	प्रतिभावान्	प्रतिभावती

(ख) इति (इन्) प्रत्यय

एकाधिक स्वर जिशिष्ट अवर्णान्त शब्दों से परे 'इन्' प्रत्यय होता है। इसके रूप 'गुणिन' के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में 'इ' प्रत्यय जोड़कर गुणिनी बनता है और नदी के समान रूप चलते हैं।

'इन्' प्रत्यय का प्रयोग भी मतुप् की तरह **'वाला'** अथजा **'वाली'** (अस्य अस्मिन् वा अस्ति) के अर्थ में होता है। जैसे—

अर्थ + इन् (अर्थिन्)	अर्थी	अर्थिणी	अर्थि
अधिकार + इन् (अधिकारिन्)	अधिकारी	अधिकारिणी	अधिकारि
धन + इन् (धनिन्)	धनी	धनिनी	धनि
साक्ष + इन् (साक्षिन्)	साक्षी	साक्षिणी	साक्षि
गुण + इन् (गुणिन्)	गुणी	गुणिनी	गुणि
चिरस्थ + इन् (चिरस्थायिन्)	चिरस्थायी	चिरस्थायिनी	चिरस्थायिनि
मान + इन् (मानिन्)	मानी	मानिनी	मानि
भाष + इन् (भाषिन्)	भाषी	भाषिणी	भाषि
सत्यवद् + इन् (सत्यवादिन्)	सत्यवादी	सत्यवादिनी	सत्यवादि
उद्योग + इन् (उद्योगिन्)	उद्योगी	उद्योगिनी	उद्योगि
दान + इन् (दानिन्)	दानी	दानिनी	दानि
सुख + इन् (सुखिन्)	सुखी	सुखिनी	सुखि

परिश्रम + इन् (परिश्रमिन्)	परिश्रमी	परिश्रमिनी	परिश्रमि
हित + कृ + इन् (हितकारिन्)	हितकारी	हितकारिणी	हितकारि
उपकार + कृ + इन् (उपकारिन्)	उपकारी	उपकारिणी	उपकारि

धनम् अस्य अस्ति = धनी = धन + इनि (इन्) = धनिन्-धनी।
बलमस्य अस्ति = बली-बली + इनि (इन्) = बलिन् = बली।
ज्ञानमस्य अस्ति = ज्ञानी-ज्ञान + इति (इन्) = ज्ञानिन् = ज्ञानी।
साहसमस्य अस्ति = साहसी-साहस + इनि (इन्) = साहसिन् = साहसी।
माया अस्य अस्ति = मायी-माया + इनि (इन्) = मायिन् = मायी।
विवेकमस्य अस्ति = विवेकी-विवेक + इनि (इन्) = विवेकिन् = विवेकी।
दुःखमस्य अस्ति = दुःखी-दुःख + इनि (इन्) = दुःखिन् = दुःखी।
प्रणयमस्य अस्ति = प्रणयी-प्रणय + इनि (इन्) = प्रणयिन् = प्रणयी।
विद्या अर्थमस्य अस्ति = विद्यार्थी-विद्यार्थ + इति (इन्) = विद्यार्थिन् = विद्यार्थी।
धनम् अर्थमस्य अस्ति = धनार्थी-धनार्थ + इति (इन्) = धनार्थिन् = धनार्थी।

(ग) त्व प्रत्यय (घ) तल प्रत्यय

तस्य भावस्त्वतलौ ५/१/११९

त्व् और तल् प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये होता है। त्व प्रत्यय का शब्द के साथ त्व तथा तल् का शब्द के साथ (ता) जुड़ता है। शब्द के अन्त में त्व प्रत्यय जुड जाने पर वह शब्द नपुंसकलिंग एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है तथा शब्द के अन्त में तल् प्रत्यय (ता) जुड़ने पर वह शब्द स्त्रीलिंग एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे—

शब्द	त्व प्रत्यय (नपुं०)	तल् प्रत्यय (स्त्री०)
ऋजु	ऋजुत्वम्	ऋजुता
कटु	कटुत्वम्	कटुता
महत्	महत्त्वम्	महत्ता
मानव	मानवत्वम्	मानवता
रमणीय	रमणीयत्वम्	रमणीयता
पञ्च	पञ्चत्वम्	पञ्चता
दान	दानत्वम्	दानशीलता
दूषित	दूषित्वम्	दूषिता
अज्ञान	अज्ञानत्वम्	अज्ञानता
तरल	तरलत्वम्	तरलता
नृपति	नृपतित्वम्	नृपतिता
पटु	पटुत्वम्	पटुता
शील	शीलत्वम्	शीलता

शब्द	त्व प्रत्यय (नपुं०)	तल् प्रत्यय (स्त्री०)
नित्य	नित्यत्वम्	नित्यता
मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
मूढ	मूढत्वम्	मूढता
दानव	दानवत्वम्	दानवता
परतन्त्र	परतन्त्रत्वम्	परतन्त्रता
सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
मधुर	मधुरत्वम्	मधुरता
मरण	मरणत्वम्	मरणता
क्रूर	क्रूरत्वम्	क्रूरता
लघु	लघुत्वम्	लघुता
अविवेक	अविवेकत्वम्	अविवेकता
चञ्चल	चञ्चलत्वम्	चञ्चलता
कृश	कृशत्वम्	कृशता
अस्थिर	अस्थिरत्वम्	अस्थिरता
चञ्चल	चञ्चलत्वम्	चञ्चलता
मित्र	मित्रत्वं	मित्रता
वीर	वीरत्वं	वीरता
पशु	पशुत्वम्	पशुता
महत्	महत्त्वम्	महत्ता

ईश्वरस्य भावः	(ईश्वर + त्व)	ईश्वरत्वम्	(ईश्वर + तल्)	ईश्वरता
चपलस्य भावः	(चपलः + त्व)	चपलत्वम्	(चपल + तल्)	चपलता
दूतस्य भावः	(दूत + त्व)	दूतत्वम्	(दूत + तल्)	दूतता
प्रवीणस्य भावः	(प्रवीण + त्व)	प्रवीणत्वम्	(प्रवीण + तल्)	प्रवीणता
न्यूनस्य भावः	(न्यून + त्व)	न्यूनत्वम्	(न्यून + तल्)	न्यूनता
कुमारस्य भावः	(कुमार + त्व)	कुमारत्वम्	(कुमार + तल्)	कुमारता
मूर्खस्य भावः	(मूर्ख + त्व)	मूर्खत्वम्	(मूर्ख + तल्)	मूर्खता
मित्रस्य भावः	(मित्र + त्व)	मित्रत्वम्	(मित्र + तल्)	मित्रता
शूरस्य भावः	(शूर + त्व)	शूरत्वम्	(शूर + तल्)	शूरता
वीरस्य भावः	(वीर + त्व)	वीरत्वम्	(वीर + तल्)	वीरता
पण्डितस्य भावः	(पण्डित + त्व)	पण्डित्वम्	(पण्डित + तल्)	पण्डितता
गुरोः भावः	(गुरु + त्व)	गुरुत्वम्	(गुरु + तल्)	गुरुता
लघोः भावः	(लघु + त्व)	लघुत्वम्	(लघु + तल्)	लघुता
पटोः भावः	(पटु + त्व)	पटुत्वम्	(पटु + तल्)	पटुता

ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्—ग्राम, जन और बन्धु शब्दों से समूह अर्थ में तल् (ता) प्रत्यय होता है। यथा—

ग्रामाणां समूहः =	ग्राम + तल्	=	ग्रामता।
जनानां समूहः =	जन + तल्	=	जनता।
बन्धूनां समूहः =	बन्धु + तल्	=	बन्धुता।
गजानां समूहः =	गज + तल्	=	गजता।
सहायानां समूहः =	सहाय + तल्	=	सहायता।
निपुणस्य भावः =	निपुण + तल्	=	निपुणता।
चतुरस्य भावः =	चतुर + तल्	=	चतुरता।

(ङ) ठक् प्रत्यय

हलसीराट्ठक् ४/३/१२४ हल और सीर शब्द से सम्बन्ध अर्थ में ठक् (इक्) प्रत्यय लगता है। यथा—हल + ठक् = हालीकम, सैरिकम्। ठक् प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये होता है।शब्द के साथ जुड़ने पर ठक् का इक् हो जाता है और शब्द के आदि (पहले) स्वर में वृद्धि (अ को आ, इ को एं तथा उ को औ) हो जाती है। जैसे—

प्रत्यय	शब्द	अर्थ
धर्म + ठक् (इक)	धार्मिक	धर्म करने वाला
अधर्म + ठक् (इक)	अधार्मिक	अधर्म करने वाला
आत्म + ठक् (इक)	आत्मिक	अपने से सम्बन्धित
बुध् + ठक् (इक)	बौद्धिक	बुद्धि से काम करने वाला
सार्वभौम + ठक् (इक)	सार्वभौमिक	हमेशा रहने वाला
मास + ठक् (इक)	मासिक	मास भर रहने वाला
उद्योग + ठक् (इक)	औद्योगिक	उद्योग से होने वाला

कालात् ठञ् (इक) ३/३/११

कालवाची शब्दों से शैषिक ठञ् (इक) प्रत्यय होता है। यथा—

मास + ठञ् (इक) = मासिकम्

संवत्सर + ठञ् (इक्) = सांवत्सरिकम्

ठक् (इक) ठगाय स्थानेभ्यः (४/३/७५)

आय के स्थान (दुकान, कारखाना) आदि के बाद ठक् (इक) प्रत्यय होता है। यथा—

शुल्कशालाया आगतः = शौल्कशालिकः।

तेन दीव्यति खनतिजयतिजितम् ४/४/८

यदि कोई किसी वस्तु से जुआ खेले, कुछ खोदे, कुछ जीते, तैरे, चले तो उस वस्तु के बाद ठक् प्रत्यय लगाकर उस व्यक्ति का बोध होता है। यथा—

अक्षैः दीव्यति (अक्ष + ठक्) = आक्षिकः (पैसे से जुआ खेलने वाला)

अभ्रया खनति (अभ्र + ठक्) = आभ्रिकः (फावड़े से खोदने वाला)

अक्षैः जयति (अक्ष + ठक्) = आक्षिकः (पासों से जीतने वाला)।
अक्षैः जितम् (अक्ष + ठक्) = आक्षिकम् (पासों से जीतने वाला)।
उडुपेन तरति (उडुप् + ठक्) = औडुपिकः (डोंगी से तैरने वाला)।
हस्तिना चरति (हस्तिन् + ठक्) = हस्तिकः (हाथी से चलने वाला)।

अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः ४/४/६० -

मति के अर्थ में अस्ति, नास्ति और दिष्ट इनशब्दों के बाद ठक् प्रत्यय होता है। यथा—

अस्ति + ठक् = आस्तिकः (अस्ति परलोकः इत्येवं मतिर्यस्य सः)।
नास्ति + ठक् = नास्तिकः (नास्तीति मतिर्यस्य सः)।
दिष्ट + ठक् = दैष्टिकः (दिष्टमिति मतिर्यस्य सः) भाग्यवादी

शीलम् ४/४/६१/ तत्र नियुक्तः ४/४/६९

जिसे बात करने का स्वभाव हो, उसमें तथा जिस काम पर नियुक्त किया गया हो, उसमें ठक् प्रत्यय होता है। यथा—

अपूप + ठक् = आपूपिकः (अपूपभक्षणं शीलमस्य सः) पूआ खाने के स्वभाव वाला।
आकर + ठक् = आपूपिकः (आकरे नियुक्तः) खजांची।

दध्नष्ठक् ४/२/१८ संस्कृतम् ४/४/३

दही से बनी हुई चीज पर तथा किसी वस्तु (घी, मिर्च आदि) से बनी हुई चीज पर ठक् प्रत्यय लगता है। यथा—

दधि संस्कृतं दाधिकम् (दही से बनी हुई चीज)।
दध्ना संस्कृतं दाधिकम् (दही से बनी हुई चीज)।
तैलेन संस्कृतम् तैलिकम् (तेल से बनी हुई वस्तु)।
घृतेन संस्कृतम् घार्तिकम् (घी से बनी हुई वस्तु)।
मरीचेन संस्कृतम् मारिचिकम् (मिर्च से छौंकी हुई वस्तु)।

(ठक्, ठञ्, ठन्) इक—विभिन्नार्थक

(१) रैवतिकः (रेवती + ठक्) रेवत्याः अपत्यं पुमान्। (खेती का पुत्र)
(२) वर्ष + ठक् = वार्षिकम् = वर्षेण दीयते इति (कालवाची)।
(३) एकत्र होना अर्थ में—सैनिक + ठक् = सैनिकाः।
(४) पूछना अर्थ में—सुस्नातं पृच्छतीति सौस्नातिकः।
सुखशयनं पृच्छतीति सौखशयनिकः।
(५) अस्त्र के प्रयोग अर्थ में—अस + ठक् = आसिक् (तलवार चलाने वाला)।
धनुष् + ठक् = धानुष्कः (धुनर्धारी)।
(६) आचरण अर्थ में—(धर्म + ठक्) धर्मं चरतीति धार्मिकः (धर्मपरायण)।
शकटेन चरतीति शकटिकः (शकट + ठक्) गाड़ी से चलनेवाला
वेतनेन जीवतीति वैतनिकः (वेतन + ठक्) वेतन से जीविका चलाने वाला।

वाहनेन गच्छतीति वाहनिकः (वाहन + ठक्) (ढोने वाला)।

उपदेश + ठक् (औपदेशिकः) उपदेश देने वाला।

उत्संगेन हरतीति (औत्संगिकः) उत्संग + ठक्।

लाक्षया रक्तम् (लाक्षिकम्) लाक्षा + ठक् (लाक्षा से रंगा हुआ)।

रोचने + ठक् (रौचनिकः) गोरोचना से सुशोभित हुआ।

शकल + ठक् (शाकलिकः) चितकबरा या धब्बे वाला।

वेदम् अधीते = वेद + ठक् = वैदिकः (वेद का विद्यार्थी)।

न्याय + ठक् = नैयायिकः (न्याय का छात्र)।

वार्तिकः = वृत्तिम् अधीते (वृति + ठक्) टीका को पढ़ने वाला।

लौकायतिकः (लोकायतं अधीते) लोकायत + ठक् (चार्वाक पढ़ने वाला)।

समूह अर्थ में = धनुकम् = (धेनुनां समूहः) धनु + ठक्। (गायों का समूह)।

कैदारिकम् = केदाराणां समूहः (केदार + ठक्) (खेतों का समूह)।

आत्मानम् अधिकृत्य भवः (अध्यात्म + ठक्) आध्यात्मिकः (आत्मा सम्बन्धी),

आधिदैविकम् = (आधिदेव + ठक्) (देवों से सम्बन्धित)।

आधिभौतिकम् = (आधिभूत + ठक्) (पंचभूतों से सम्बन्धित)।

ऐहलौकिकः = (इहलोक + ठक्) (इस लोक से सम्बन्धित)।

पारलौकिकः = (परलोक + ठक्) (परलोक से सम्बन्धित)।

वाद्यों के वाचक अर्थों में— मृदंग + ठक् = मार्दंगिकः।
वीणा + ठक् = वैणिकः।
झर्झर + ठक् = झार्झरिकः।

पथा चरति इति (पथ + ठक्) = (पथिकः) (रास्ते में जाने वाला)।

अश्वेन चरति इति (अश्व + ठक्) = (आश्विकः) (घोड़े से लाने वाला)।

आकर्षेण चरति इति (आकर्ष + ठक्) = (आकर्षिकः) (खींचने वाला)।

स्त्री-प्रत्यय

स्त्रीलिङ्ग शब्द दो प्रकार के होते हैं—मूल स्त्रीलिङ्ग शब्द और प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द। जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्री वाचक है और रूप पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में नहीं होते, उनको मूल स्त्री वाचक शब्द कहते हैं।

प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द मूल से स्त्रीलिङ्ग नहीं होते, किन्तु स्त्री प्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है, ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं अर्थात् पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं।

स्त्री प्रत्यय—वे प्रत्यय हैं, जिनके लगने पर पुल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। स्त्री प्रत्यय आठ हैं—

(१) टाप् (२) डाप् (३) चाप् (४) ङीप् (५) ङीष् (६) ङीन् (ई), (७) उङ् (ऊ) और (८) ति।

ई प्रत्यय करने पर निम्न परिवर्तन होते हैं—

(i) हलन्त शब्दों का तृतीय एकवचन में जो रूप रहता है, वही ई प्रत्यय करने पर भी होता है। यथा—

प्रत्यञ्च — प्रतीची
राजन् — राज्ञी
मघवन् — मघोनी
श्वन् — शुनी
अर्यमेन् — अर्यम्णी
विद्वस् — विदुषी.

(ii) शब्द के अन्तिम अ और ई का लोप हो जाता है। यथा—

गौर — गौरी
औत्स — औत्सी
पर्वत — पार्वती।

(iii) यदि तद्धित प्रत्यय 'य' से बना कोई प्रतिपादिक शब्द है, तो उस य का लोप हो जाता है। जैसे—

गार्ग्य + ई — गार्गी

(iv) कुछ शब्दों के अन्तिम 'य' का लोप हो जाता है—

सूर्य — सौरी
मत्स्य — मत्सी आदि।

(v) लट् और लृट् के स्थान पर होने वाले शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के बीच में न और जुड़ जाता है—पचन्ती, याती-यान्ती, शासती—सासन्ती, ददती—ददन्ती, दीव्यती—दीव्यन्ती, महती—महन्ती।

(vi) अजाद्यष्टाप् (४/१/४)

अकरान्त प्रतिपादकों से और अजादिगण (अजादिगण में शब्द हैं—अज, एडक (भेड़), अश्व, चटक (चिड़िया), मूषक, बाल, वत्स, होड, पाक, मन्द, विलात, क्रुञ्च। बगुला, क्रौञ्च (पक्षी), उष्णिह, देवविश् (देवता), ज्येष्ठ, मध्यम, कनिष्ठ और कोकिल) में आये शब्दों से स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय टाप् (आ) होता है। यथा—

भुञ्जान	—	भुञ्जाना	
अज	—	अजा	(बकरी)
एडक	—	एडका	(भेड़ी)
अश्व	—	अश्वा	(घोड़ी)
चटक	—	चटका	(चिड़िया)
मूषक	—	मूषिका	(चुहिया)
बाल	—	बाला	(लड़की)
वत्स	—	वत्सा	(कन्या)
होड	—	होडा	(धोकरी)
मन्द	—	मन्दा	(कन्या)
सफल	—	सफला	(सफला)
अस्त्रफल	—	अस्त्रफला	(नाम)
शणफल	—	शणफला	(नाम)
सत्पुष्प	—	सत्पुष्पा	(नाम)
प्राक्पुष्प	—	प्राक् पुष्पा	(नाम)
काण्डपुष्प	—	काण्ड पुष्पा	(नाम)
प्रान्तपुष्प	—	प्रान्त पुष्पा	(नाम)
शतपुष्प	—	शतपुष्पा	(नाम)
शूद्र	—	शूद्रा	(शूद्र स्त्री)
अमूल	—	अमूला	(स्वच्छा)

(vii) यदि प्रत्यय के 'क' से युक्त प्रतिपादिक है तो 'आ' प्रत्यय होने पर क से पूर्ववर्ती 'अ' को ई हो जाता है। सर्विका, कारिका-मामक—मामिका। नरक-नरिका दाक्षिणात्यिका, इहत्यिका।

अपवाद नियम—

(i) यद् और तद् सर्वनामों से अक प्रत्यय होकर बने हुये रूपों में।

(ii) तद्धित प्रत्यय लगाकर बने हुये रूपों में।

(iii) समस्त पदों में। यथा—यका, सका, अधित्यका, (पठार) उपत्यका (तराई) बहुपरिव्राजका, क्षिपका, क्षिपका, ध्रुवका, कन्यका।

कभी-कभी अ को विकल्प से इ होता है—

तारका (तारा)	—	तारिका (रक्षा में समर्थ स्त्री)
वर्णका	—	वर्णिका (चोगा वस्त्र)
वर्तका (पक्षी)	—	वर्तिका (पक्षी)
अष्टका	—	अष्टिका (अन्य अर्थों में)
सूतका	—	सूतिका
पुत्रका	—	पुत्रिका
वृन्दारक	—	वृन्दारिका (एक देवी)
आर्यिक	—	आर्यका, आर्यिका
चटका	—	चटकिका, चटकका

सुनयिका, सुपकिका।

टाप्

कोकिल	—	कोकिला (मादा कोयल)
ज्येष्ठ	—	ज्येष्ठा (बड़ी)
कनिष्ठ	—	कनिष्ठा (छोटी)
मध्यम	—	मध्यमा (बीच की)
दक्ष	—	दक्षा (निपुणा)
कृश	—	कृशा (दुबली)
उत्तर	—	उत्तरा
दक्षिण	—	दक्षिणा
पूर्व	—	पूर्वा
प्रथम	—	प्रथमा
द्वितीय	—	द्वितीया
तृतीय	—	तृतीया
मनोहर	—	मनोहरा
पाचक	—	पाचिका
नाटक	—	नाटिका
पालक	—	पालिका
बालक	—	बालिका
गायक	—	गायिका
दायक	—	दायिका
दारक	—	दारिका
घातक	—	घातिका

टाप् प्रत्यय—अकारान्त शब्द 'अक्' अन्त वाले शब्द और अजादि गण शब्दों के साथ टाप् प्रत्यय (आ) लगता है। जैसे—

शब्द प्रत्यय		स्त्री०	अर्थ
अज + टाप् (आ)	=	अजा	बकरी
अश्व + टाप् (आ)	=	अश्वा	घोड़ी
प्राचीन + टाप् (आ)	=	प्राचीना	पुरानी
निर्बाध + टाप् (आ)	=	निर्बाधा	बाधा रहित
शत्रु + टाप् (आ)	=	शत्रुता	शत्रु वाली
मृदु + टाप् (आ)	=	मृदुता	मृदु स्वभाव वाली
धावक + टाप् (आ)	=	धाविका	दौड़ने वाली
निर्मल + टाप् (आ)	=	निर्मला	स्वच्छ रहने वाली
धन्य + टाप् (आ)	=	धन्या	भाग्य वाली
बाल + टाप् (आ)	=	बाला	लड़की
बालक + टाप् (आ)	=	बालिका	लड़की
प्रवीण + टाप् (आ)	=	प्रवीणा	कुशल कार्य करने वाली
अनुज + टाप् (आ)	=	अनुजा	पीछे पैदा होने वाली
कुशल + टाप् (आ)	=	कुशला	कुशल रहने वाली
चिकित्सक् + टाप् (आ)	=	चिकित्सिका	चिकित्सा करने वाली
सेवक + टाप् (आ)	=	सेविका	सेवा वाली
सरल + टाप् (आ)	=	सरला	सरल स्वभाव वाली
अनुपम् + टाप् (आ)	=	अनुपमा	जिसकी उपमा न हो ऐसी
उज्जवल + टाप् (आ)	=	उज्जवला	स्वच्छ मन वाली
प्रसन्न + टाप् (आ)	=	प्रसन्नता	प्रसन्न रहने वाली
शुभद् + टाप् (आ)	=	शुभदा	शुभ देने वाली
पवित्र + टाप् (आ)	=	पवित्रा	पवित्र मन वाली
विचित्र + टाप् (आ)	=	विचित्रा	विचित्र रूप वाली
शोभमान + टाप् (आ)	=	शोभमाना	सुन्दर लगने वाली
पूर्णकाम + टाप् (आ)	=	पूर्णकामा	पूर्ण कामनाओं वाली
सेवमान + टाप् (आ)	=	सेवमाना	सेवा करने वाली
राजमान + टाप् (आ)	=	राजमाना	सुशोभित होने वाली
पूजनीय + टाप् (आ)	=	पूजनीया	पूजे जाने वाली
रक्षणीय + टाप् (आ)	=	रक्षणीया	रक्षा किये जाने वाली
श्रवणीय + टाप् (आ)	=	श्रवणीया	सुने जाने वाली

शब्द प्रत्यय		स्त्री०	अर्थ
पठनीय + टाप् (आ)	=	पठनीया	पढ़े जाने वाली
दुर्लभ + टाप् (आ)	=	दुर्लभा	कठिनाई से प्राप्त होने वाली

ङीप् (ई)

(१) ऋन्नेभ्योङीप्—ऋकारान्त और नकारान्त शब्दों से ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—

दातृ + ङीप्	= दातृ + ई	= दात्री
गन्तृ + ङीप्	= गन्तृ + ई	= गन्त्री
तेजस्विन् + ङीप्	= तेजस्विन् + ई	= तेजस्विनी
गुणिन् + ङीप्	= गुणिनी	

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दातृ—दाता + ई	दात्री
धातृ—धाता + ई	धात्री
कर्तृ—कर्ता + ई	कर्त्री
जनयितृ—जनयिता + ई	जनयित्री
प्रसवितृ—प्रसविता + ई	प्रसवित्री
संवादयितृ—संवादयिता + ई	संवादयित्री
भोक्तृ—भोक्ता + ई	भोक्त्री
गन्तृ—गन्ता + ई	गन्त्री
कामिन्—कामी + ई	कामिनी
मानिन्—मानी + ई	मानिनी
मायाविन् + मायावी + ई	मायाविनी
विलासिन् + विलासी + ई	विलासिनी
उपकारिन् + उपकारी + ई	उपकारिणी
अनुरागिन् + अनुरागी + ई	अनुरागिणी
प्रियवादिन् + प्रियवादी + ई	प्रियवादिनी

(२) टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयपठकठञ्कञ्करपः—टित्, ढ, अण, अञ्, द्वयसच, दघ्नय्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, क्वरप्, कञ् आदि प्रत्ययों से बने अकारान्त शब्दों से ङीप् प्रत्यय लगता है। यथा—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
वनेचर + ङीप् =	वनचरी
सेनाचर + ङीप् =	सेनाचरी

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कुम्भकार + ङीप् =	कुम्भकारी
तापस् + ङीप् =	तापसी
वैनतेय + ङीप् =	वैनतेयी
गाङ्गेय + ङीप् =	गाङ्गेयी
सारमेय + ङीप् =	सारमेयी
चतुष्ठय + ङीप् =	चतुष्ठयी
दशतय + ङीप् =	दशतयी
यादृश + ङीप् =	यादृशी
तादृश + ङीप् =	तादृशी
जानुद्वयस् + ङीप् =	तानुद्वयसी
जानुदध्न + ङीप् =	जानुदघ्नी
जानुमात्र + ङीप् =	जानुमात्री
ठक-धार्मिक + ङीप् =	धार्मिकी
मासिक + ङीप् =	मासिकी
लावणिक + ङीप् =	लावणिकी
नश्वर + ङीप् =	नश्वरी

(३) उगितश्च—उ और ऋ लोप होने वाले प्रत्ययों के योग से बने शब्दों के उत्तर ङीप् (ई) प्रत्यय होता है।यथा—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भवत् + ङीप् (ई) =	भवती
विद्वस् + ङीप् =	विदुषी
गतवत् + ङीप् =	गतवती
कृतवत् + ङीप् =	कृतवती
प्रेयस्	प्रेयसी
स्मृतवत्	स्मृतवती
श्रुतवत्	श्रुतवती
पटीयस्	पटीयसी
धावत्	धावन्ती
तिष्ठत्	तिष्ठन्ती
पश्यत्	पश्यन्ती
नश्यत्	नश्यन्ती
कारयत्	कारयन्ती

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
तुदत्	तुदती, तुदन्ती
यात्	याती, यान्ती
भविष्यत्	भविष्यन्ती
कुर्वत्	कुर्वन्ती
सदत्	सदती
युवत्	युवती
करिष्यत्	करिष्यती
यावत्	यावती
श्रीमत्	श्रीमती
पुत्रवत्	पुत्रवती
गरीयस्	गरीयसी
गच्छत्	गच्छन्ती
चलत्	चलन्ती
दीव्यत्	दीव्यन्ती
जीर्यत्	जीर्यन्ती
स्मारयत्	स्मारयन्ती
इच्छत्	इच्छन्ती, इच्छती
मात्	मान्ती, माती
करिष्यत्	करिष्यन्ती

(४) 'द्विगोः' द्विगुसंज्ञक अकारान्त शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पञ्चमूलः	पञ्चमूली
अष्टाध्यायः	अष्टाध्यायी
दशमूलः	दशमूली
अष्टसहस्रः	अष्टसहस्री
त्रिलोकः	त्रिलोकी
त्रिपुरुषः	त्रिपुरुषी
द्विपुरुषः	द्विपुरषा, द्विपुरुषी

(५) दाभहायनान्ताच्च—जिन शब्दों के आदि में संख्या और अन्त में दामन् या हायन हो, उन शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है।

यथा—

द्वे दाम्नी यस्याः सा द्विदाम्नी, द्विहायनी, त्रिहायणी, चतुर्हायिणी।

(६) **वयसि प्रथमे**—बाल्यावस्था और युवावस्था के बोधक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कुमारः	कुमारी
तरुणः	तरुणी
चिरण्टः	चिरण्टी
वर्क्करः	वर्क्करी
किशोरः	किशोरी
वधुटः	वधूटी
कलमः	कलमी

(७) **पत्युर्नो यज्ञसंयोगे**—यज्ञ संयोग अर्थात् यज्ञ के फलभागित्व अर्थ में पति के उत्तर ङीप् और इकार के स्थान में न होता है। यथा—

वशिष्ठस्य पत्नी, दिलीपस्य पत्नी।

(८) **विभाषा सपूर्वस्य**—पति शब्दान्त स्त्रीलिङ्ग, समास में विकल्प से ङीप् (ई) प्रत्यय और न् का आगम होता है। यथा—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सभापतिः	सभापत्नी
युवपतिः	युवपत्नी
जीवपतिः	जीवपत्नी
वृद्धपतिः	वृद्धपत्नी
स्थूलपतिः	स्थूलपत्नी
कृशपतिः	कृशपत्नी

(९) **अन्तर्वत् पतिवतोर्नुक्**—अन्तवत् और पतिवत् शब्द से ङीप् प्रत्यय और नुक् का आगम होता है। यथा—

अन्तर्वत्नी, पतिवत्नी।

(१०) **वनो र च**—वन् प्रत्ययान्त शब्दों तथा उन समासों में, जहाँ ऐसे शब्द आर पद में हों, ङीप् प्रत्यय लगता है और न के स्थान पर र् होता है। यथा—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पीवन्	पावरी
अतिधीवन्	अतिधीवरी
धीवन्	धीवरी
पारदृश्वन्	पारदृश्वरी

(११) मनोरौ वा—मनु शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने में ङीप् प्रत्यय लगता है और मनु शब्द को औकार तथा पद्य में एकारादेश होता है। यथा—

मनोः स्त्री = मनायी, मनावी, मनुः।

(१२) पादोऽन्यतरस्याम्—पाद भागान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है। यथा—

द्विपद्-द्विपदी, त्रिपाद्-त्रिपदी, चतुष्पाद्-चतुष्पदी।

